15 दाज्यू

शेखर जोशी

शेखर जोशी का जन्म 10 सितंबर 1932 को अल्मोड़ा (उत्तरांचल) के ओलियागांव नामक स्थान पर हुआ। आपने केकड़ी एवं अजमेर में स्कूली शिक्षा प्राप्त की। लगभग तीस वर्षों तक इलाहाबाद के निकट एक सैनिक औद्योगिक प्रतिष्ठान में कार्यरत रहने के बाद आप स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं। आपके चर्चित कहानीसंग्रह हैं ''कोसी का घटवार'', ''साथ के लोग'', ''दाज्यू'', ''हलवाहा'' एवं ''नौरंगी बीमार है। आपकी आदमी और कीड़े कहानी को 1955 में धर्मयुग द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। नई कहानी आंदोलन के चर्चित कथाकार ''महावीरप्रसाद द्विवेदी पुरस्कार' और ''पहल'' सम्मान से सम्मानित। ''दाज्यू'' कहानी पर चिल्ड्रन फिल्म सोसायटी द्वारा फिल्म का निर्माण।

दाज्यू कहानी बाल-श्रमिक पर लिखी गयी कहानी है। मदन एक पहाड़ी बालक है, जो पेट की आग बुझाने के लिए शहर में आकर एक होटल में काम करता है। भोलेपन में जिसे वह अपना ''दाज्यू'' अर्थात् बड़ा भाई समजने लगता है, वही किस प्रकार एक दिन उसके बाल-मन पर आघात कर जाता है इसका मार्मिक चित्रण इस कहानी में हुआ है।

चौक से निकल कर बायीं ओर जो बड़े साइनबोर्डवाला छोटा कैफे है, वहीं जगदीशबाबू ने उसे पहली बार देखा था। गोरा-चिट्टा रंग, नीली शफ़्फ़ाफ़ आँखें, सुनहरे बाल और चाल में एक अनोखी मस्ती-पर शिथिलता नहीं। कमल के पत्ते पर फिसलती हुई पानी की बूँद की सी फुर्ती। आँखों की चंचलता देखकर उसकी उम्र का अनुमान केवल नौ-दस वर्ष ही लगाया जा सकता था और शायद यही उम्र उसकी रही होगी।

अधजली सिगरेट का एक लम्बा कश खींचते हुए जब जगदीशबाबू ने कैफे में प्रवेश किया तो वह एक मेज पर से प्लेटें उठा रहा था और जब वे पास ही कोने की टेबल पर बैठे तो वह सामने था। मानो, घंटों से उनकी, उस स्थान पर आनेवाले व्यक्ति की, प्रतीक्षा कर रहा हो। वह कुछ बोला नहीं। हां, नम्रता प्रदर्शन के लिये थोड़ा झुका और मुस्कुराया भर था, पर उसके इसी मौन में जैसे सारा 'मीनू' समाहित था। ''सिंगल चाय'' का आर्डर पाने पर वह एक बार पुनः मुस्करा कर चल दिया और पलक झपकते ही चाय हाज़िर थी।

मनुष्य की भावनाएँ बड़ी विचित्र होती है। निर्जन, एकांत स्थान में निस्संग होने पर भी कभी-कभी आदमी एकाकी अनुभव नहीं करता। लगता है, इस एकाकीपन में भी सब कुछ कितना निकट है, कितना अपना है। परंतु इसके विपरीत कभी-कभी सैकड़ों नर-नारियों के बीच जनरवमय वातावरण में रह कर भी सूनेपन की अनुभूति होती है। लगता है, जो कुछ है वह पराया है, कितना अपनत्वहीन! पर यह अकारण ही नहीं होता। इस एकाकीपन की अनुभूति, इस अलगाव की जड़ें होती हैं- विछोह या विरक्ति की किसी कथा के मूल में।

जगदीशबाबू दूर देश से आये हैं, अकेले हैं। चौक की चहल-पहल कैफे के शोरगुल में उन्हें लगता है, सब कुछ अपनत्वहीन है। शायद कुछ दिनों रहकर, अभ्यस्त हो जाने पर उन्हें इसी वातावरण में अपनेपन की अनुभूति होने लगे, पर आज तो लगता है यह अपना नहीं अपनेपन की सीमा से दूर, कितना दूर है, और तब उन्हें अनायास ही याद आने लगते हैं अपने गाँव पड़ोस के आदमी, स्कूल-कालेज के छोकरे, अपने निकट शहर के कैफे-होटल...।

'चाय साब !'

जगदीशबाबू ने राखदानी में सिगरेट झाड़ी। उन्हें लगा, इन शब्दों की ध्वनि में वही कुछ है जिसकी रिक्तता उन्हें अनुभव हो रही है और उन्होंने अपनी शंका का समाधान कर लिया-

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'मदन।'

'अच्छा, मदन! तुम कहाँ के रहनेवाले हो?'

'पहाड़ का हूँ, बाबूजी!'

'पहाड़ तो सैकड़ों है- आबू, दार्जिलिंग, मसूरी, शिमला, अल्मोड़ा! तुम्हारा गाँव किस पहाड़ में है?'

इस बार शायद उसे पहाड़ और जिले का भेद मालूम हो गया। मुस्करा कर बोला-

'अल्मोड़ा सा'ब अल्मोड़ा।'

'अल्मोड़ा मैं कौन-सा गाँव है?' विशेष जानने की गरज से जगदीशबाबू ने पूछा।

इस प्रश्न ने उसे संकोच में डाल दिया। शायद अपने गाँव की निराली संज्ञा के कारण उसे संकोच हुआ था। इस कारण टालता हुआ सा बोला, वह तो दूर है सा'ब अल्मोड़ा से पंद्रह-बीस मील होगा।'

'फिर भी, नाम तो कुछ होगा ही।' जगदीशबाबू ने जोर देकर पूछा।

'डोट्यालगों' वह सकुचाता हुआ सा बोला।

जगदीशबाबू के चेहरे पर पुती हुए एकाकीपन की स्याही दूर हो गयी और जब उन्होंने मुस्करा कर मदन को बताया कि वे भी उसके निकटवर्ती गाँव के रहनेवाले हैं तो लगा जैसे प्रसन्नता के कारण अभी मदन के हाथ से 'ट्रे' गिर पड़ेगी। उसके मुँह से शब्द निकलना चाह कर भी न निकल सके। खोया-खोया सा वह अपने अतीत को फिर लौट-लौट कर देखने का प्रयत्न कर रहा हो।

अतीत-गाँव... ऊँची पहाड़ियां... नदी... ईजा (मां)...बाबा... दीदी... भुलि (छोटी बहन)... दाज्यू (बड़ा भाई)...!

मदन को जगदीशबाबू के रूप में किसकी छाया निकट जान पड़ी! ईजा?- नहीं, बाबा? नहीं, दीदी, ...भुलि? - नहीं, दाज्यू? हाँ, दाज्यू!

दो-चार ही दिनों में मदन और जगदीशबाबू के बीच की अजनबीपन की खाई दूर हो गयी। टेबल पर बैठते ही मदन का स्वर सुनाई देता-

'दाज्यू, जैहिन्न...।'

'दाज्यू, आज तो ठंड बहुत है।'

'दाज्यू, क्या यहाँ भी 'ह्यू' (हिम) पड़ेगा?'

'दाज्यू, आपने तो कल बहुत थोड़ा खाना खाया।' तभी किसी ओर से 'बॉय' की आवाज़ पड़ती और मदन उस आवाज़ की प्रतिध्वनि के पहुँचने से पहले ही वहाँ पहुँच जाता! आर्डर लेकर फिर जाते-जाते जगदीशबाबू से पूछता, 'दाज्यू, कोई चीज?'

'पानी लाओ।'

'लाया दाज्यू', शब्द को उतनी ही आतुरता और लगन से दुहराता जितनी आतुरता से बहुत दिनों के बाद मिलने पर भी माँ अपने बेटे को चूमती है।

कुछ दिनों बाद जगदीशबाबू का एकाकीपन दूर हो गया। उन्हें अब चौक, कैफे ही नहीं सारा शहर अपनेपन के रंग में रंगा हुआ सा लगने लगा परंतु अब उन्हें यह बार-बार 'दाज्यू' कहलाना अच्छा नहीं लगता और यह मदन था कि दूसरी टेबल से भी 'दाज्यू'...।

'मदन! इधर आओ।'

'आया दाज्यू!'

'दाज्यू' शब्द की आवृत्ति पर जगदीशबाबू के मध्यमवर्गीय संस्कार जाग उठे- अपनत्व की पतली डोरी 'अहं' की तेज धार के आगे न टिक सकी।

'दाज्यू', चाय लाऊं?'

'चाय नहीं, लेकिन यह दाज्यू-दाज्यू क्या चिल्लाते रहते हो दिन रात। किसी की प्रेस्टिज का ख्याल भी नहीं है तुम्हें?'

जगदीशबाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन 'प्रेस्टिज' का अर्थ समज सकेगा या नहीं, यह भी उन्हें ध्यान नहीं रहा, पर मदन बिना समझाये ही सब कुछ समज गया था।

मदन को जगदीशबाबू के व्यवहार से गहरी चोट लगी। मैनेजर से सिरदर्द का बहाना कर वह घुटनों में सर दे कोठरी में सिसकियाँ भर-भर रोता रहा। घर-गाँव से दूर ऐसी परिस्थिति में मदन का जगदीशबाबू के प्रति आत्मीयता-प्रदर्शन स्वाभाविक ही था। इसी कारण आज प्रवासी जीवन में पहली बार उसे लगा जैसे किसी ने उसे ईजा की गोदी से, बाबा की बांहों के और दीदी के आंचल की छाया से बलपूर्वक खींच लिया हो परंतु भावुकता स्थायी नहीं हो तो। रो लेने पर, अंतर की घुमड़ती वेदना की आँखों की राह बाहर निकाल लेने पर मनुष्य जो भी निश्चय करता है वे भावुक क्षणों की अपेक्षा अधिक विवेकपूर्ण होते हैं।

मदन पूर्ववत काम करने लगा।

दूसरे दिन कैफे जाते हुए अचानक ही जगदीशबाबू की भेंट बचपन के सहपाठी हेमंत से हो गयी। कैफे में पहुँच कर जगदीशबाबू ने इशारे से मदन को बुलाया परंतु उन्हें लगा जैसे वह उनसे दूर-दूर रहने का प्रयत्न कर रहा हो। दूसरी बार बुलाने पर ही मदन आया। आज उसके मुँह पर वह मुस्कान न थी और न ही उसने 'क्या लाऊँ दाज्यू' कहा। स्वयं जगदीशबाबू को ही कहना पड़ा, 'दो चाय, दो ऑमलेट' परंतु तब भी 'लाया दाज्यू' कहने की अपेक्षा 'लाया सा'ब' कहकर वह चल दिया। मानों दोनों अपरिचित हों।

'शायद पहाड़िया है?' हेमंत ने अनुमान लगाकर पूछा।

'हाँ', रूखा सा उत्तर दे दिया जगदीशबाबू ने और वार्तालाप का विषय ही बदल दिया।

मदन चाय ले आया था।

'क्या नाम है तुम्हारा लड़के?' हेमन्त ने अहसान चढ़ाने की ग़रज़ से पूछा।

कुछ क्षणों के लिए टेबुल पर गंभीर मौन छा गया। जगदीशबाबू की आँखें चाय की प्याली पर ही झुकी रह गयीं। मदन की आँखों के सामने विगत स्मृतियाँ घूमने लगीं... जगदीशबाबू का एक दिन ऐसे ही नाम पूछना... फिर... दाज्यू आपने तो कल थोड़ा ही खाया... और एक दिन 'किसी की प्रेस्टिज का ख्याल नहीं रहता तुम्हें...'

जगदीशबाबू ने आँखें उठाकर मदन की ओर देखा, उन्हें लगा जैसे अभी वह ज्वालामुखी सा फूट पड़ेगा।

हेमंत ने आग्रह के स्वर में दुहराया, 'क्या नाम है तुम्हारा?'

बॉय कहते हैं सा'ब मुझे। संक्षिप्त-सा उत्तर देकर वह मुड़ गया। आवेश में उसका चेहरा लाल होकर और भी अधिक सुंदर हो गया था।

शब्दार्थ और टिप्पणी

शक्काफ उजली **मीनू** व्यंजन, सूची **निस्संग** अकेला **जनश्दमय** शोरगुलयुक्त **हिम** बर्फ **ह्यू** बर्फ **अहं** घमंड **प्रेस्टिज** इज्जत **वेदना** पीड़ा

स्वाध्याय

1. **सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :**

(1) मदन का गाँव किस पहाड़ी क्षेत्र में था?

(अ) मसूरी (ब) शिमला (क) दार्जिलिंग (क) अल्मोड़ा

(2) कहानी के अंत में नए ग्राहक हेमंत को मदन ने अपना नाम क्या बताया?

(अ) मदन (ब) पहाड़ो (क) बाँप (ड) बेयश

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) मदन का गाँव किस पहाड़ी क्षेत्र में था?

(2) नए ग्राहक हेमंत को मदन ने अपना नाम क्या बताया?

(3) जगदीशबाबू के व्यवहार से मदन को चोट क्यों लगी?

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिए :**

(1) जगदीशबाबू को पहले-पहले नए शहर आकर कैसा लगता था?

(2) प्रारंभ में जगदीशबाबू का व्यवहार मदन के प्रति कैसा था?

(3) जगदीशबाबू ने मदन को 'दाज्यू' कहने पर क्यों डाँटा?

(4) 'दाज्यू' कहानी में बाल-मन की संवेदना का मार्मिक चित्रण हुआ है- समझाइए।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- गाँव की मुलाकात कीजिए और गाँव के मानवीय संबंधो को समझाइए।
- परिश्रम का महत्त्व - निबंध लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- बाल श्रमिकों के चित्रों का संग्रह करवाइए।

●

16 भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य संबंध

आनंदशंकर माधवन

श्री आनंदशंकर माधवन का जन्म केरल प्रदेश के क्विलन जिले में हुआ। डॉ. जाकिरहुसेन के संपर्क में आने से हिन्दु-मुस्लिम के मधुर संबंधों के पक्षधर बन गए। महात्मा गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन में भी माधवनजी का सक्रीय सहभाग रहा। जेल में रहकर हिन्दी भाषा का अध्ययन किया। जेल से छूटकर आप भारतभ्रमण को निकल पड़े और बाद में बिहार में मंदार विद्यापीठ की स्थापना की। सन् 1984 में 'अद्वैत मिशन' और सन् 1985 में शिवधाम अभिनव शिक्षा नगरी की स्थापना की। अब आप तीनों संस्थाओं के संचालक है। मलयालम तथा तमिल दोंनो ही भाषाओं पर पूर्ण अधिकार होने के बावजूद आपने हिंदी साहित्य में सृष्टि की। आपके विषयों में दार्शनिकता, आधुनिकता एवं आध्यात्मिकता का बाहुल्य है। 'बिखरे हीरे', 'अनलशलाका', 'हिंदी आंदोलन', 'आमंत्रित मेहमान', 'आरती', 'उषा', 'संजीवनी' आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'आमंत्रित मेहमान' बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा पुरस्कृत है।

माधवनजी ने प्राचीन गुरु-शिष्य-परंपरा की गरिमा को स्पष्ट करते हुए वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर परोक्ष रूप में करारा व्यंग्य किया है। हमारे समाज में व्यावसायिक संस्कृत का बोलबाला है। इस कारण गुरु-शिष्य संबंधों में परिवर्तन आया है। पहले विद्यालय मंदिर के समान माने जाते थे। शिक्षा देना एक आध्यात्मिक अनुष्ठान था। वह परम सुख प्राप्ति का एक माध्यम था। उस जमाने में पैसे देकर शिक्षा खरीदी नहीं जाती थी। क्या आज वैसी स्थिति है? क्या आज शिक्षा के क्षेत्र में वहीं निष्ठा, वही त्याग नजर आता है? लेखक ने हमें अंतर्मुख होकर सोचने के लिए बाध्य किया है।

हमारे समाज में व्यावसायिक संस्कृति का बोलबाला है, इसी कारण गुरु-शिष्य संबंधों में परिवर्तन आया है। पहले विद्यालय मंदिर के समान माने जाते थे। शिक्षा देना एक आध्यात्मिक अनुष्ठान था। वह परमेश्वर प्राप्ति का एक माध्यम था। पैसे देकर शिक्षा खरीदी नहीं जाती थी। आज स्थिति बिलकुल बदल गई है और अब शिक्षणकार्य पेट पालने का साधन बन गया है।

जिसे भारतीय संस्कृति कहा जाना चाहिए वह आज भारतीय मानसिक क्षितिज में क्रियाशील नहीं है। आज एक प्रकार की अव्यवस्थित व्यावसायिक संस्कृति व्याप्त है जिसकी जड़ शायद यूरोप में है। भारतीयों के सार्वजनिक व्यवहार में गुरु-शिष्य संबंध का भी तद्नुरूप परिवर्तन हो गया है। यहाँ गुरु वेतनभोगी नहीं होते थे और न शिष्य को ही शुल्क देना पड़ता था। पैसे देकर विद्या खरीदने की यह क्रय-विक्रय पद्धति/निस्संदेह उस भारतीय मिट्टी का उपज नहीं है। शिक्षणालय एक प्रकार के आश्रम अथवा मंदिर के समान थे। गुरु को साक्षात् परमेश्वर ही समजा जाता था। शिष्य पुत्र से अधिक प्रिय होते थे। यहाँ सम्मान मिलना ही शक्ति पाने का रहस्य है। प्राचीन काल में गुरु की शिक्षादान क्रिया उनका आध्यात्मिक अनुष्ठान थी, परमेश्वरप्राप्ति उनका एक माध्यम था। वह आज पेट पालने का ज़रिया बन गई है।

प्रारंभ में विवेकानंद को भारत में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं हुआ पर जब उन्होंने अमेरिकन नाम कमा लिया तो भारतवासी दौड़े मालाएँ लेकर स्वागत करने! रवीन्द्रनाथ ठाकुर को भी नोबल पुरस्कार मिला तो बंगाली लोग दौड़े यह राग अलापते हुए - अमादेर ठाकुर अमादेर कठोर सुपूत...। दक्षिण भारत में कुछ समय पहले तक भरतनाट्यम् और कथकली को नहीं पूछता था, पर जब उसे विदेशों में मान मिलने लगा तो आश्चर्य से भारतवासी सोचने लगे अरे, हमारी संस्कृति में इतनी अपूर्व चीजें भी पड़ी थीं क्या...। यहाँ के लोगों को अपनी खूबसूरती नहीं नजर आती; मगर पराए के सौंदर्य को देखकर मोहित हो जाते हैं। जिस देश में ज्ञान पाने के लिए मैक्समूलर ने जीवनभर प्रार्थना की उस देश के निवासी आज जर्मनी और विलायत जाना स्वर्ग जाने जैसा अनुभव करते हैं। ऐसे लोगों को प्राचीन गुरु-शिष्य संबंध की महिमा सुनाना गधे को गणित सिखाने जैसा व्यर्थ प्रयास ही हो सकता है।

एक बार सुप्रसिद्ध भारतीय पहलवान गामा मुंबई आए। उन्होंने विश्व के सारे पहलवानो को कुश्ती में चैलेंज दिया। अखबारों में यह समाचार प्रकाशित होते ही एक पारसी पत्रकार ने उत्सुकतावश उनके निकट पहुँचकर उनसे पूछा, 'साहब, विश्व के किसी भी पहलवान से लडने के लिए आप तैयार हैं तो आप अपने अमुक शिष्य से ही लड़कर विजय प्राप्त करके दिखाओ। गामा आजकल के शिक्षाक्रम में रंगे नहीं थे। इसलिए उन्हें इन शब्दोंने हैरान कर दिया। आँखे फाड़कर उस पत्रकार का चेहरा ताकते ही रह गए। बाद में धीरे से कहा, ''भाई साहब, मैं हिंदुस्तानी हूँ। हमारा अपना एक निजी रहन-सहन है। शायद इससे आप परिचित नहीं है। जिस लड़के का आपने नाम लिया,

वह मेरे पसीने की कमाई, मेरा खून है और मेरे बेटे से भी अधिक प्यार है इसमें और मुझमें फ़रक़ ही कुछ नहीं है। मैं लड़ा या वह लड़ा, दोनों बराबर ही होगा। हमारी इस परंपरा को आप समझने की चेष्टा कीजिए। हम लोगों को वंशपरंपरा से शिष्य परंपरा अधिक प्रिय है। ख्याति और प्रभाव में हम सदा यह चाहते हैं कि हम अपने शिष्यों से कम प्रभावी रहें। यानी हम यही चाहेंगे कि संसार में जितना नाम मैंने कमाया उससे कहीं अधिक मेरे पिता कमाएँ। मुझे लगता है, आप हिंदुस्तानी नहीं है...।''

भारत में गुरु-शिष्य संबंध का वह भव्य रूप आज साधुओं, पहलवानों और संगीतकारों में थोड़ा बहुत ही सही, पाया जाता है। भगवान रामकृष्ण बरसों योग्य शिष्य को पाने के लिए प्रयत्न करते रहे। उनके जैसे व्यक्ति को भी उत्तम शिष्य के लिए रो-रोकर प्रार्थना करनी पड़ी थी। इसे समझा जा सकता है कि एक गुरु के लिए उत्तम शिष्य कितना महँगा और महत्त्वपूर्ण है। संतान प्राप्ति वर्ग उन्हें दुःख नहीं देता पर बगैर शिष्य के रहने के लिए वे एकदम तैयार नहीं होते। इस संबंध में भगवान ईसा का एक कथन सदा स्मरणीय है। उन्होंने कहा था, 'मेरे अनुयायी लोग मुझसे कहीं अधिक महान है और उनकी जूतियाँ होने की योग्यता भी मुझमें नहीं है।' यही बात है, गांधीजी बनने की क्षमता जिनमें है उन्हें गांधीजी अच्छे लगते हैं और वे ही उनके पीछे चलते भी हैं। विवेकानंद सिर्फ़ उन्हें पसंद आयेगें जिनमें विवेकानंद बनने की अद्‌भुत शक्ति निहित है।

कविता के मर्मज्ञ और रसिक स्वयं कवि से अधिक महान होते हैं। संगीत के पागल सुननेवाले ही स्वयं संगीतकार से अधिक संगीत का रसास्वादन करते हैं। यहाँ पूज्य नहीं, पुजारी ही श्रेष्ठ है। यहाँ सम्मान पानेवाले नहीं, सम्मान देनेवाले महान हैं। स्वयं पुष्प में कुछ नहीं है, पुष्प का सौंदर्य उसे आनेवाले की दृष्टि में है। दुनिया में कुछ नहीं है, जो कुछ भी है हमारी चाह में, हमारी दृष्टि में है। यह अद्‌भुत भारतीय व्याख्या अजीब-सी लग सकती है, पर हमारे पूर्वज सदा इसी पथ के यात्री रहे हैं।

उत्तम गुरु में जातिभावना भी नहीं रहती। कितने ही मुसलमान पहलवानों के हिंदू चेले हैं और संगीतकारों के मुसलमान शिष्य रहे हैं। यहाँ परख गुण की, साधना की और प्रतिभा की होती भक्ति और श्रद्धा की ही कीमत है, न कि जातिसंप्रदाय, आचार-विचार या धर्म की। मुझे क्या लिखाया था एक विद्वान मुसलमान ने ही। उन्होंने कभी नहीं सोचा कि यह हिंदू है और मुसलमान बनाना चाहिए। पुराने जमाने में मौलवी लोग बड़े-बड़े रामाणी होते थे और आज देहांतों में भरत मियाँ, रंजीत मियाँ आदि अधिक संख्या में दिखाई देते हैं।

आज के गुरु भी सिर्फ़ सेवा लेने में ही चतुर हैं, देने में नहीं। उपनिषदों में आचार्यों ने कहा, सेवा देने की चीज है, लेने की नहीं'। सेवा लेने के अधिकारी बच्चे, रोगी, असहाय और वृद्ध बच्चों को परमेश्वर का ही मूर्त रूप समझ। सेवा रूपी पूजा से उनकी शक्ति को प्रज्वलित करने क्षमता और सहृदयता रखनेवाले ज्ञानी और तपस्वी पुरोहित आजकल के गुरु नहीं रह गए। किसी भी देवमंदिर की मूर्ति की शक्ति उतनी मात्रा तक ही संभव है जितनी मात्रा तक उसके पुजारी की भावपूजा में नैवेद्‌यभावना भरी रहती है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

परिवर्तन बदलाव **सुप्रसिद्ध** सर्वश्रेष्ठ **निजी** अपना **उत्तम** श्रेष्ठ **अनुयायी** शिष्य

मुहावरे

गधे को गणित सिखाना व्यर्थ प्रयास करना **ताकते रहना** आश्चर्य से देखते ही रहना **पसीने की कमाई** कठिन परिश्रम का फल **रंग जाना** (किसी काम में) निमग्न होना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा केन्द्र कैसे थे?

(2) जब रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नोबल पुरस्कार मिला तब बंगाली लोग कौन-सा राग आलापने लगे?

(3) भगवान रामकृष्ण बरसों तक योग्य शिक्षा पाने के लिए क्या करते थे?

(4) भगवान ईसा का कौन-सा कथन सदा स्मरणीय है?

(5) गांधीजी किन्हें अच्छे लगते है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) युरोप के प्रभाव के कारण आज गुरु-शिष्य संबंधो में क्या अंतर आया है?

(2) पुजारी की शक्ति मूर्ति में कैसे विकसित होने लगी?

(3) विवेकानंद और रवीन्द्रनाथ ठाकुर को इस देश में अधिक महत्त्व कब मिला?

3. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) सम्मान पानेवालों से सम्मान देनेवाले

(2) ''जो गुरु से मार खाते हैं उनका भविष्य उज्जवल होगा ही।''

4. सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :

(1) इसमें ओर मुजमें फ़रक ही कुछ नहीं है। (भविष्यकाल)

(2) हम अपने शिष्यों से कम प्रमुख रहें। (पूर्ण भूतकाल)

(3) उपनिषदों में आचार्यों ने कहाँ है। (सामान्य भूतकाल)

5. मुहावरों का अर्थ देकर वाक्यप्रयोग कीजिए :

ताकते रहना, पसीने की कमाई, रंग जाना

6. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

रोगी, असहाय, वृद्ध

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- पढ़ो हिन्दी, बोलो हिन्दी में और जोड़ो भारत निबंध का लेखन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- **परिसंवाद :**

  (1) 'गुरु-शिष्य संबंध' कल और आज

  (2) वर्तमान शिक्षा में अनुशासन का महत्त्व

●

शब्द-संरचना

भाषा में एक शब्द से दूसरा शब्द बनाने की प्रक्रिया को शब्द-संरचना कहा जाता है। शब्द-संरचना में मूल शब्दों में कुछ शब्दांश या शब्दों को जोड़कर नए शब्द बनाएँ जाते हैं। हिन्दी में शब्द-संरचना की प्रक्रिया तीन प्रकार से होती है-

1. उपसर्ग द्वारा
2. प्रत्यय द्वारा
3. समास / संधि के द्वारा

यहाँ हम उपसर्ग और प्रत्यय की सहायता से शब्द-संरचना की जानकारी प्राप्त करेंगे।

उपसर्ग द्वारा शब्द-संरचना :

- वे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन कर देते हैं वे उपसर्ग कहलाते हैं जैसे-

  उप + देश = उपदेश

  स्व + देश = स्वदेश

  वि + देश = विदेश

- उपर्युक्त उदाहरण में 'देश' शब्द से पूर्व 'उप' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द 'उपदेश' और 'वि' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द 'विदेश' बने। अत: यहाँ 'उप', 'स्व', 'वि' - उपसर्ग हैं।
- उपसर्ग की तीन विशेषताएँ होती हैं-

  (1) शब्द के अर्थ में नई विशेषता लाना।

  जैसे : प्र + बल = प्रबल

  अनु + शासन = अनुशासन

  (2) शब्द के अर्थ को उलट देना।

  जैसे : अ + धर्म = अधर्म

  अप + मान = अपमान

  (3) शब्द के अर्थ में, कोई खास परिवर्तन न करके मूलार्थ के इर्द-गिर्द अर्थ प्रदान करना।

  जैसे : वि + शुद्ध = विशुद्ध

  परि + भ्रमण = परिभ्रमण

- उपसर्ग शब्द निर्माण में बड़ा सहायक होता है। एक ही मूल शब्द विभिन्न उपसर्गों के योग से विभिन्न अर्थ प्रकट करता है। जैसे-

  - आ + हार = आहार - भोजन
  - सम् + हार = संहार - नाश
  - उप + हार = उपहार - सौगात
  - उत् + हार = उद्धार - मुक्ति, मोक्ष
  - प्र + हार = प्रहार - चोट करना
  - वि + हार = विहार - मनोरंजनार्थ यत्र-तत्र घूमना

- हिन्दी भाषा में हिन्दी के अपने उपसर्ग, संस्कृत के उपसर्ग और अरबी, फारसी, उर्दू के उपसर्गों का प्रयोग होता है। यहाँ इन भाषाओं के प्रमुख उपसर्ग, उनके अर्थ एवं उनसे बने शब्द दिए जा रहे हैं।

हिन्दी के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अ	अभाव, निषेध	अचेत, अज्ञान, अभाव, अमर
अन	अभाव निषेध	अनपढ़, अनमोल, अनजान, अनबन
अध	आधा	अधपका, अधखिला, अधमरा
औ	हीन, निषेध	औगुन, औघट, औढ़र
क/कु	बुरा, बुराई	कपूत, कुचाल, कुपात्र, कुकर्म
दु	कम, बुरा	दुबला, दुश्चरित्र, दुकाल
नि	निषेध, अभाव	निगू, निकम्मा, निहत्था, निधड़क
बिन	अभाव, निषेध	बिनदेखा, बिनब्याहा, बिनबोला
भर	पूरा	भरपूर, भरसक, भरपेट
स	अच्छा, सहित	सपूत, सचेत, सहर्ष, सजातीय
सु	उत्तमता, साथ	सुड़ौल, सुजान
पर	अधिक, आगे	परपोता, परदादा
न	अभाव	नपूता, नपूती

संस्कृत के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अ	अभाव, निषेध	अधर्म, अनीति, अज्ञान, असत्य
आ	तक, पूर्ण, सहित, उल्टा	आमरण, आकण्ठ, आमुख, आक्रोश, आक्रमण, आरोहण
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ, समीपता	अधिनायक, अधिपति, अध्ययन, अधीक्षक, अध्यात्म, अधिकार
अति	अधिक	अतिक्रमण, अतिपात, अतिरिक्त, अत्याचार, अतिशय, अत्यंत, अत्याचार
अनु	पीछे, समान, बाद में आनेवाला	अनुशासन, अनुरूप, अनुभूति, अनुकंपा, अनुगामी, अनुज, अनुकूल, अनुकरण, अनुराग, अनुशीलन
अभि	सामने, ओर, अच्छा, पास	अभिमुख, अभियोग, अभियान, अभिज्ञान, अभ्यास, अभिलाषा, अभिनव, अभिप्राय, अभिशाप
अव	बुरा, हीन	अवनति, अवगुण, अवज्ञा
उत्	ऊपर, श्रेष्ठ, निकट, सादृश्य	उपनाम, उपकृत, उपदेश, उपनगर, उपकार, उपवन, उद्धार, उत्कृष्ट, उदय, उत्पत्ति, उत्कर्ष
दुर्	कठिन, बुरा, हीनता	दुर्लभ, दुर्भाग्य, दुर्बल, दुर्गति, दुर्गुण, दुर्दशा, दुराचार, दुर्जन, दुर्दिन
दुस्	कठिन, बुरा	दुस्साहस, दुष्कर, दुष्कर्म, दुसाध्य, दुर्गम, दुःसह, दुश्शासन

निर्	बिना, नहीं	निर्जन, निर्भय, निर्वाह, निर्गम, निर्मल, निर्बल, निर्दोष, निरपराध, निराकार
निस्	रहित, नहीं	निष्कपट, निष्काम, निश्छल, निश्चल, निस्संदेह, निस्तेज
परा	उल्टा, विपरीत, नाश, दशा	पराधीन, पराजय, पराभव, पराक्रम, परामर्श, पराकाष्ठा
परि	चारों ओर, आस-पास, पूर्णता	परिक्रमा, परिणाम, परिमाण, परिश्रम, परित्यक्त
प्र	अधिक, आगे, गति	प्रयत्न, प्रसिद्ध, प्रहार, प्रलय, प्रताप, प्रबल, प्रक्रिया, प्रकोप
प्रति	सामने, विरुद्ध, विशेषार्थ में	प्रतिहिंसा, प्रतिध्वनि, प्रतिवाद, प्रतिकार, प्रतिज्ञा, प्रतिभा, प्रतिष्ठा, प्रतिदान
वि	विशिष्ट, भिन्न	विख्यात, विज्ञान, विपक्ष, विदेश, वियोग
सम्	संयोग, अच्छा, पूर्ण, साथ	संतोष, संस्कार, संयुक्त, संवाद, सम्मेलन
सु	अच्छा, श्रेष्ठता	सुपुत्र, सुशिक्षित, सुरम्य, सुजन, सुकाल, सुगम
स्व	अपना	स्वराज्य, स्वतंत्र

अरबी, फारसी, उर्दू के उपसर्ग :

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द**
अल	निश्चित	अलबेला, अलबत्ता
ऐन	ठीक, पूरा	ऐनवक्त, ऐन मौका
कम	अल्प, हीन	कमज़ोर, कमअक्ल, कमउम्र
खुश	अच्छा, उत्तमता	खुशबू, खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशहाल
ग़ैर	भिन्न, निषेध	गैरकानूनी, ग़ैरहाज़िर
दर	में, अन्दर	दरअसल, दरहकीकत, दरकार
ना	अभाव	नापसंद, नामंजूर, नाराज़, नालायक, नादान, नाजायज
ब	के अनुसार, और	बनाम, बदौलत, बखूबी
बद	बुरा, हीनता	बदनाम, बदतमीज, बदबू
बर	बाहर, पर	बरदाश्त, बरखास्त, बरवक्त
बा	साथ, से	बाकायदा, बाइज्जत, बाकलम
बिला	बगैर, बिना	बिलावजह, बिलाकसूर, बिलाअक्ल
बे	बिना, अभाव	बेईमान, बेकसूर, बेचारा, बेहोश
ला	बिना, अभाव	लावारिस, लाज़वाब, लापरवाह
सर	मुख्य, श्रेष्ठ	सरपंच, सरनाम, सरताज
हम	साथ, बराबर	हमदर्द, हमसफ़र, हमउम्र, हमराज
हर	प्रत्येक	हरसाल, हरघड़ी, हररोज, हरदफा

स्वाध्याय

1. **उपसर्ग से आप क्या समझते हैं?**

2. **किन्ही तीन उपसर्ग चुनकर उन उपसर्गों के योग से तीन-तीन शब्द बनाइए।**

3. **सही विकल्प चुनिए :**

(1) किस शब्द में 'आ' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?

(क) आजीवन (ख) आमरण (ग) आकर्षक (घ) आराम

(2) किस शब्द में 'अप' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?

(क) अपमान (ख) अपना (ग) अपकार (घ) अभिशाप

(3) किस शब्द में 'अप' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?

(क) अवसर (ख) अवज्ञा (ग) अवगुण (घ) अवनति

(4) किस शब्द में 'स' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?

(क) सत्कार (ख) सपूत (ग) सहर्ष (घ) सजातीय

(5) किस शब्द में 'वि' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है?

(क) विदेश (ख) विपक्ष (ग) विख्यात (घ) विमान

4. **निम्नलिखित उपसर्गों में प्रयुक्त उपसर्गों के सही विकल्प का चयन कीजिए :**

(1) संयोग-

(क) सन (ख) सन् (ग) सम (घ) सम्

(2) पुनर्विवाह-

(क) पुनः (ख) पुनर (ग) पुनर् (घ) पुन

(3) अपव्यय-

(क) अप (ख) अ (ग) अपि (घ) अप्

प्रत्यय द्वारा शब्द संरचना :

- ऐसे शब्दांश जो शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं वे प्रत्यय कहलाते हैं जैसे-

  चाचा + ई = चाची

  लड़ + आई = लड़ाई

  दया + आलु = दयालु

- उपर्युक्त उदाहरणों में 'चाचा', 'लड़' और 'दया' शब्दों में क्रमशः 'ई', 'आई', तथा 'आलु' शब्दांशों का प्रयोग करके नए शब्द बनाएँ गए हैं। अतः यहाँ 'ई', 'आई' तथा 'आलु' प्रत्यय हैं।

- **प्रत्यय के भेद :**

  प्रत्यय के मुख्य रूप से दो भेद किए जा सकते हैं:

  (1) कृत् प्रत्यय और

  (2) तद्धित प्रत्यय

  अब, इन प्रत्ययों के बारे में समझेंगे।

(1) कृत् प्रत्यय :

- जो प्रत्यय क्रिया के धातु रूप के पीछे जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहा जाता है।
- हिन्दी में मुख्य रूप से कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक और क्रियावाचक कृत प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है।

(1) **कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय :** जिस प्रत्यय से कार्य करनेवालों अर्थात् 'कर्ता' का बोध हो, उन्हें कर्तृवाचक कृत प्रत्यय कहा जाता है। कर्तृवाचक कृत प्रत्यय के उदाहरण निम्नांकित हैं :

कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बने शब्द
अक्कड़	पी, धूम, भूल	पिवक्कड़, घुमक्कड़, भुलक्कड़
आक	तैर	तैराक
आका	लड़, उड़	लड़ाका, उड़ाका
आडी	खेल	खिलाड़ी
इयल	मर, अड़	मरियल, अड़ियल
ऊ	खा, कमा, चल, बिक	खाऊ, कमाऊ, चलाऊ, बिकाऊ
एरा	लूट, कमा	लुटेरा, कमेरा

(2) **कर्मवाचक कृत् प्रत्यय :** जिस प्रत्यय से कर्म का बोध करानेवालों का बोध होता है उसे कर्मवाचक कृत प्रत्यय कहा जाता है। कर्मवाचक कृत प्रत्यय के उदाहरण निम्नांकित हैं:

कर्मवाचक कृत् प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बने शब्द
औना	बिछ, खेल	बिछौना, खिलौना
ना	गा, ओढ़	गाना, ओढ़ना
नी	ओढ़, सूँघ	ओढ़नी, सूँघनी

(3) **करणवाचक कृत् प्रत्यय :** जो प्रत्यय क्रिया के करण-रूप (क्रिया के साधन) रूप बनाते हैं, उन्हें करणवाचक कृत प्रत्यय कहते हैं। करणवाचक कृत प्रत्यय के उदाहरण निम्नांकित हैं:

करणवाचक कृत् प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बने शब्द
आ	धेर, झूल	धेरा, झूला
ई	फाँस, बुहार, रेत	फाँसी, बुहारी, रेती
ऊ	झाड़	झाड़ू
न	बेल, ढक, झाड़	बेलन, ढक्कन, झाड़न
नी	कतर, सूँघ, ओढ़	कतरनी, सूँघनी, ओढ़नी

(4) **भाववाचक कृत् प्रत्यय :** जिन प्रत्ययों से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं, उन्हें भाववाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। भाववाचक कृत् प्रत्यय के उदाहरण निम्नांकित हैं:

भाववाचक कृत् प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बने शब्द
आई	उतर, बुन, धो, पढ़, सी, लड़	उतराई, बनाई, धुलाई, पढ़ाई, सिलाई, लड़ाई
आवट	लिख, दिख, मिल,	लिखावट, दिखावट, मिलावट
	गिर, बुन, सजा	गिरावट, बुनावट, सजावट
आहट	गड़गड़, चिल्ला	गड़गड़ाहट, चिल्लाहट
आव	बह, बच, झुक	बहाव, बचाव, झुकाव
आन	उड़, थक, मिला	उड़ान, थकान, मिलान

(5) क्रियावाचक कृत् प्रत्यय : जिन प्रत्ययों के योग से क्रियाविशेषण अव्यय अथवा विशेष प्रकार के क्रिया शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें क्रियावाचक कृत् प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

क्रियावाचक कृत् प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
ता	चल, खा, पी, लिख	चलता, खाता, पीता, लिखता
या	खा, रो, दिखा, सजा	खाया, रोया, दिखाया, सजाया
कर	सुन, पढ़, लिख, आ	सुनकर, पढ़कर, लिखकर, आकर
ते-ते	चल, सुन	चलते-चलते, सुनते-सुनते

(2) तद्धित प्रत्यय :

- जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा अव्यय के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

शब्द	प्रत्यय	प्रत्यय के योग से बना शब्द
कला (संज्ञा)	कार	कलाकार
मीठा (विशेषण)	आस	मिठास
अपना (सर्वनाम)	पन	अपनापन
बाहर (प्रत्यय)	ई	बाहरी

- तद्धित प्रत्यय के विभिन्न भेद एवं उनके उदाहरण इस प्रकार हैं।

(1) स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय : जिन तद्धित प्रत्ययों के योग से शब्द स्त्रीलिंगवाची बन जाते हैं, उन्हे स्त्रीलिंग वाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

स्त्रीलिंग वाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
ई	चाचा, लड़का	चाची, लड़की
इन	धोबी, लुहार	धोबिन, लुहारिन
आ	शिष्य, बाल	शिष्या, बाला
आनी	देवर, नौकर	देवरानी, नौकरानी
नी	शेर, मोर	शेरनी, मोरनी
आइन	बाबू, पंडा	बबुआइन, पंडाइन
इया	बूढ़ा, बंदर	बुढ़िया, बंदरिया
इनी	तपस्वी, हाथी	तपस्विनी, हथिनी

(2) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय : जिन तद्धित प्रत्ययों के योग से किसी कार्य के करनेवाले का बोध होता है, वे कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे-

कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
गर	जादू, बाजी	जादूगर, बाजीगर
वाला	दुकान, दूध	दुकानवाला, दूधवाला
आरी	भीख	भिखारी
कार	चित्र, पत्र	चित्रकार, पत्रकार
ई	तेल, रोग	तेली, रोगी
एरा	लुट	लुटेरा

(3) स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय : जिन तद्धित प्रत्ययों से स्थान का बोध हो, उन्हें स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय	**शब्द**	**प्रत्यय के योग से बना शब्द**
इया	जयपुर, मुंबई	जयपुरिया, मुंबइया
वाला	दिल्ली, मथुरा	दिल्लीवाला, मथुरावाला
ई	बंगाल, गुजरात	बंगाली, गुजराती
वी	लुधियाना, लखनऊ	लुधियानवी, लखनवी

(4) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय : जिन तद्धित प्रत्ययों से किसी वस्तु या प्राणी या व्यक्ति के गुण या विशेषता का बोध हो, उसे गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

गुणवाचक तद्धित प्रत्यय	**शब्द**	**प्रत्यय के योग से बना शब्द**
आ	प्यास, ठंड	प्यासा, ठंडा
ई	क्रोध, कीमत	क्रोधी, कीमती
ईय	दर्शन, प्रार्थना	दर्शनीय, प्रार्थनीय
ईला	रंग, शर्म	रंगीला, शर्मीला
इक	धर्म, दिन	धार्मिक, दैनिक
लु	दया, श्रद्धा	दयालु, श्रद्धालु
वान	धन, गुण	धनवान, गुणवान
ईन	रंग, नमक	रंगीन, नमकीन
ईय	जाति, राष्ट्र	जातीय, राष्ट्रीय
वती	गुण, बल	गुणवती, बलवती
मती	बुद्धि, रूप	बुद्धिमती, रूपमती
ऐला	विष, वन	विषैला, वनैला
इल	स्वप्न, स्नेह	स्वप्निल, स्नेहिल
अंत	सुख, दुःख	सुखांत, दुःखात
इत	हर्ष, धृणा	हर्षित, धृणित

(5) भाववाचक तद्धित प्रत्यय : जिन तद्धित प्रत्ययों के योग से भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण होता है, उन्हें भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

भाववाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
ता	मनुष्य, मित्र	मनुष्यता, मित्रता
त्व	देव, व्यक्ति	देवत्व, व्यक्तित्व
आपा	बूढ़ा, पूजा	बुढ़ापा, पुजापा
पन	लड़का, बच्चा	लड़कपन, बचपन
ई	बीमार, चालाक	बीमारी, चालाकी
आई	अच्छा, कंबा	अच्छाई, लंबाई
इमा	काला, लाल	कालिमा, लालिमा
आहट	चिकना, कड़ुवा	चिकनाहट, कड़ुवाहट
इयत	इन्सान, हैवान	इन्सानियत, हैवानियत

(6) **बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय :** जिन तद्धित प्रत्ययों के योग से बहुवचनवाची शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय कहा जाता है। जैसे–

बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
एँ	कन्या, लता	कन्याएँ, लताएँ
	बहू, वधू	बहुएँ, वधुएँ
याँ	चिड़िया, गुड़िया	चिड़ियाँ, गुड़ियाँ
इयाँ	नदी, दवाई	नदियाँ, दवाइयाँ

(7) **संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय :** जिन तद्धित प्रत्ययों से किसी संबंधवाची शब्द का निर्माण होता है, उन्हें संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
एरा	मामा, मौसा	ममेरा, मौसेरा
आल	ससुर, नाना	ससुराल, ननिहाल
एय	राधा, कुंती	राधेय, कौंतेय

(8) **लघुतावाची तद्धित प्रत्यय :** जिन तद्धित प्रत्ययों से लघुतावाची शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें लघुतावाची तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे–

लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
इया	खाट, डिब्बा	खटिया, डिबिया
ई	रस्सा, टोकरा	रस्सी, टोकरी
री	कोठा, छाता	कोठरी, छतरी
ड़ी	संदूक, पंख	संदूकड़ी, पंखुड़ी
टी	लंगोट	लंगोटी

(9) क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय : जिन तद्दित प्रत्ययों के जुडने से क्रमवाची शब्दों का निर्माण होता है, उन्हें क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे-

क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय	शब्द	प्रत्यय के योग से बना शब्द
वाँ	नौ, दस	नौवाँ, दसवाँ
हरा	एक, दो	इकहरा, दोहरा
गुना	दो, तीन	दोगुना, तिगुना

स्वाध्याय

1. प्रत्यय किसे कहते हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
2. किन्हीं चार प्रत्यय चुनकर उन प्रत्ययों के योग से बने दो-दो शब्द बनाइए।
3. उपसर्ग और प्रत्यय का भेद स्पष्ट कीजिए।
4. सही विकल्प चुनिए।

(1) किस शब्द में 'एरा' प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है?

(क) चचेरा (ख) ममेरा (ग) सवेरा (घ) फुफेरा

(2) किस शब्द में 'ता' प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है?

(क) पशुता (ख) सुंदरता (ग) भिन्नता (घ) तोता

(3) किस शब्द में 'नी' प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है?

(क) चीनी (ख) शेरनी (ग) जाटनी (घ) सिंहनी

5. **निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों के सही विकल्पों का चयन कीजिए :**

(1) संदूकड़ी:

(क) कड़ी (ख) ड़ी (ग) ई (घ) अड़ी

(2) देवरानी:

(क) आनी (ख) नी (ग) ई (घ) रानी

(3) सजावट:

(क) ट (ख) आहट (ग) वट (घ) आवट

(4) पुजारिन:

(क) इन (ख) आइन (ग) अन (घ) रिन

●

17 तुलसी के पद

तुलसीदास

(जन्म: 1532 ई. : निधन: सन् 1623 ई.)

भक्त चूड़ामणि, लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास हिंदी के शीर्ष कवि के रूप में ख्यात हैं। आपका जन्मस्थान–राजपुर, जि. बाँदा (उत्तर प्रदेश) माना गया है। आपके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। बाल्यावस्था में आपको माता–पिता का सुख प्राप्त नहीं हुआ। बाबा नरहरिदास ने आपको अपने पास रखा। इन्हीं के साथ गोस्वामीजी ने वर्षों तक काशी, अयोध्या और चित्रकूट में रहकर वेद, वेदांग, इतिहास–पुराण, दर्शन का गहन अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त किया। बाबा नरहरिदास ने ही राम–नाम की दीक्षा दी थी। कहते हैं कि पत्नी रत्नावली की भर्त्सना के बाद आप रामभक्ति की ओर उन्मुख हुए। बाद में तो आप राम के परम भक्त बन गए। आपकी रचनाओं का संबंध प्रधान रूप में राम से है। व्रज और अवधी दोनों भाषाओं में आपने काव्य रचे हैं। अपने समय की प्रचलित प्रधान काव्यशैलियों में आपने रामसाहित्य का सृजन किया है। इस नाते तुलसी को अपने समय का प्रतिनिधि कवि भी कहा गया है। 'रामचरित मानस' आपका श्रेष्ठ ग्रंथ है। भारत की जनता में राम को ईश्वर रूप में जो मान्यता प्राप्त है, उसका श्रेय तुलसी को ही दिया जा सकता है। 'रामचरित मानस' को धर्मग्रंथ भी माना जाता है। 'रामचरितमानस', 'विनयपत्रिका', 'कवितावली', 'गीतावली', 'दोहावली', 'श्रीकृष्ण गीतावली', 'बरवै रामायण', 'जानकी मंगल', 'पार्वती मंगल', 'रामाज्ञा प्रश्नावली', 'रामलला नहछू' तथा 'वैराग्यसंदीपनि' आपकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

अहं अथवा घमंड जीवन में उत्पन्न होनेवाली अनेकानेक समस्याओं का कारण हुआ करता है। यदि व्यक्ति अपने अहं का नाश कर विनय को धारण कर सके तो वह जीवन में अनेक संकटों से बच सकता है। इन पदों में तुलसीदास ने अपने आराध्य देव राम के प्रति अपनी विनय भावना का प्रदर्शन करते हुए आराध्य को छोड़कर अन्यत्र न जाने का निश्चय व्यक्त किया है। एक भक्त की यह विनय भावना यदि आज के व्यक्ति अपने जीवन में उतार सकें तो संघर्षों की धूप में झुलसते हुए संसार के प्राणों को एक नई चेतना मिल सकती है।

---

(1)

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको नाम पतितपावन जग, केहि अति दीन पियारे॥
कौने देव बराई बिरदहित हठि–हठि अधम उधारे।
खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप जड़, जवन कवन सुर तारे॥
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब मायाबिबस बिचारे।
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे॥

(2)

तू दयालू, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंजहारी॥
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो?
मो समान आरत नहि, आरतिहर तोसो॥
बह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर, हौं चेरो।
तात, मात, गुरु, सखा तू सब बिधि हितु मेरो॥
तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिए जो भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु! चरन–सरन पावै॥

('विनयपत्रिका')

शब्दार्थ और टिप्पणी

पतितपावन पापियों का उद्धार करनेवाला ईश्वर **बराई** बड़प्पन, श्रेष्ठता, महिमा **बिरद** बड़ाई **अधम** पापी, दुष्ट, नीच, निकृष्ट **उधारना** उद्धार करना **दनुज** राक्षस, असुर **मुनि** तपस्वी, त्यागी **नाग** सर्प, **मनुज** मनुष्य **अपनपौ** अपनापन **पातकी** पापी **अनाथ** जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो, अशरणा, असहाय **आरत** दु:खी **चेरो** दास

विशेष-समज

खग : जटायु, रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध । वह सूर्य के सारथी अरुण का पुत्र था। सीताहरण के समय इसने रावण से युद्ध किया और वह घायल हुआ था। राम का सीताहरण का समाचार देने के बाद प्राण छोड़े।

मृग : मारीच, एक राक्षस जो ताड़का राक्षसी का पुत्र तथा रावण का अनुचर था। वह सुवर्णमृग के रूप में राम द्वारा मारा गया था।

व्याध : वाल्मीकि, पहले हिंसावृत्ति से जीवन यापन करते थे, परंतु बाद में सनकादि ऋषियों के उपदेश से जीवहिंसा छोड़कर तपस्या में लगे और महर्षि वाल्मीकि कहलाए। इन्होंने रामायण की रचना की।

पषान : अहल्या, महर्षि गौतम की पत्नी। शापवश वह पथ्थर बन गई थी। राम के चरणों के स्पर्श से इसका उद्धार हुआ।

बिटप : यमलार्जुन, कुबेर के पुत्र नलकुबेर और मणिग्रीव नारद के शापवश गोकुल में दो अर्जुन वृक्षों के रूप में उत्पन्न हुए। किसी अपराध पर जब यशोदा ने कृष्ण को इन पेड़ों से बाँधा तो वे गिर पड़े और उनका उद्धार हो गया।

जवन : एक यवन। कहा जाता है कि एक मुसलमान ने सूकर के आघात से मरते समय 'हराम' शब्द कहा था। अनजाने में ही 'राम' शब्द का उच्चारण करने से उसकी मुक्ति हो गई।

स्वाध्याय

1. **एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**
   (1) तुलसीदास के मत से कौन पतितपावन हैं ?
   (2) भगवान को अति दीन कैसे लगते हैं ?
   (3) भगवान ने हठ करके किनका उद्धार किया ?
   (4) माया के प्रति विवश होकर कौन-कौन सोचते हैं ?
   (5) प्रभु दानी है तो कवि क्या है ?
   (6) कवि पापपुंजहारी किसे कहते हैं ?
2. **विस्तार सहित उत्तर लिखिए :**
   (1) तुलसीदासजी प्रभु के चरणों को छोड़कर कहीं ओर क्यों नहीं जाना चाहते हैं ?
   (2) तुलसीदास ने अपने और भगवान के बीच कौन-कौन से संबंध जोड़े है ? क्यों ?
   (3) 'तोहि-मोहि नाते अनेक, मानिए जो भावे' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

3. भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

(1) देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब मायाबिबस बिचारे।
तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे॥

(2) नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोंसो?
मो समान आरत नहि, आरतिहर तोसो॥

4. समानार्थी शब्द लिखिए।

अधम, दनुज, मनुज, पातकी, आरत, चेरो

5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए।

(1) पापियों का उद्धार करनेवाला ईश्वर

(2) जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो

योग्यता-विस्तार

- काव्यमें दिये गए पत्रों से जुडे प्रसगों की विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- तुलसीदासजी के जीवन और साहित्य सर्जन के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कीजिए।
- तुलसीदासजी का चलचित्र में प्रसिद्ध एक पद खोजिए और उसको गाकर कक्षा में सुनाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- तुलसीदास के चित्र प्राप्त करके छात्रों से उनके जीवन और कवन के चार्टस तैयार करवाइए।

●

18 अंधेरी नगरी

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

(जन्म: 1850 ई. : निधनः सन् 1885 ई.)

भारतेन्दु हरिश्चंद्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। वे हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। इनका मूल नाम 'हरिश्चंद्र' था। 'भारतेन्दु' उनकी उपाधि थी। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारंभ भारतेन्दु हरिश्चंद्र से माना जाता है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में प्रसिद्ध भारतेन्दुजी ने देश की गरीबी, पराधीनता, शासको के अमानवीय शोषण के चित्रण को ही अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग किया। भारतेन्दु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिन्दी पत्रकारिता, नाटक और काव्य के क्षेत्र में उनका बहुमूल्य योगदान रहा। हिन्दी में नाटकों का प्रारंभ भारतेन्दु हरिश्चंद्र से माना जाता है। भारतेन्दुने हिन्दी नाटक की नींव को सुदृढ़ बनाया। उन्होंने 'हरिश्चंद्र पत्रिका', 'कवि वचन सुधा' और 'बाल प्रबोधिनी' पत्रिकाओं का संपादन भी किया। वे एक उत्कृष्ट कवि, सशक्त, व्यंगकार सफल नाटककार, जागरुक पत्रकार तथा ओजस्वी गद्यकार थे। इसके अलावा वे लेखक, कवि, संपादक, निबंधकार, एवं कुशल वक्ता भी थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ 'भारतेन्दुकला' वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' 'सत्य हरिश्चंद्र', 'भारत दुर्दशा', 'अंधेरे नगरी' (नाट्य साहित्य) 'पूर्ण प्रकाश', 'चंद्रप्रभा' (उपन्यास) 'स्त्रियों की उत्पत्ति', 'बादशाह दर्पण', (नाट्यशास्त्र) 'कश्मीर कुसुम', 'रामायण का समय' (शोध रचना) 'सुंदरी सिलक', 'पावस कवितासंग्रह' (काव्य) आदि। भारतेन्दुजी ने मात्र 34 वर्ष की अल्पायु में ही विशाल साहित्य की रचना की। पैंतीस वर्ष की आयु में उन्होंने मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से इतना लिखा, इतनी दिशाओं में काम किया कि उनका समुचा रचनाकर्म पथदर्शक बन गया। आपका महान साहित्यिक कर्म देवीशक्ति से प्रेरित ही माना जायेगा।

प्रस्तुत एकांकी में महंत और उनके दो शिष्य एक नगरी में पहुँचते है, जहाँ मूर्ख राजा और मूर्ख प्रजा से उनका पाला पड़ता है। नगरी में सर्वत्र अज्ञान का अंधकार था। अनुशासन रहित विवेकहीन प्रजा में किसी से प्रेम, आत्मियता का नामोनिशान दिखाई नहीं देता था। अच्छे-बूरे में अंतर नहीं, सच और झूठ का ज्ञान नहीं, भाजी का मूल्य और खाजे का मूल्य एक टका। 'यथा राजा तथा प्रजा' कहावत के अनुसार राजा भी मूर्ख और प्रजा भी मूर्ख, ऐसे लोग अपनी मूर्खता के कारण अपने विनाश का कारण बन जाते हैं। 'अधेर नगरी' एकांकी से लेखक पाठकों को इसी अविवेकी अज्ञानी वृत्ति से परिचित करवाकर इससे बचे रहने की प्रेरणा देते हैं।

पात्र-परिचय

महंत
नारायणदास : महंत के शिष्य
गोवर्धनदास : महंत के शिष्य
चौपट राजा : अंधेर नगरी का राजा
कुँजड़िन, हलवाई, फ़रियादी, कल्लू बनिया, कारीगर,
चूनेवाला, भिस्ती, कसाई, गड़रिया, कोतवाल, सिपाही आदि।

पहला दृश्य

(**स्थान** : शहर से बाहर सड़क; महंतजी और दो चेले बातें कर रहे हैं।

महंत : बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखाई पड़ता है। देख, कुछ भिक्षा मिले तो भगवान को भोग लगे और क्या!

नारायणदास : गुरुजी महाराज, नगर तो बहुत ही सुंदर है, पर भिक्षा भी सुंदर मिले तो बड़ा आनंद हो!

महंत : बच्चा गोवर्धनदास, तू पश्चिम की ओर जा और नारायणदास पूर्व की ओर जाएगा।
(गोवर्धनदास जाता है।)

गोवर्धनदास : (कुँजड़िन से) क्यों, भाजी क्या भाव?

कुँजड़िन : बाबा जी, टके सेर!

गोवर्धनदास : सब भाजी टके सेर! वाह, वाह! बड़ा आनंद है। यहाँ सभी चीजें टके सेर।
(हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई, मिठाई क्या भाव?

हलवाई : टके सेर!

गोवर्धनदास : वाह, वाह! बड़ा आनंद है। सब टके सेर क्यों, बच्चा? इस नगरी का नाम क्या है?

हलवाई : अंधेरी नगरी।

गोवर्धनदास : और राजा का नाम क्या है?

हलवाई : चौपट राजा।

गोवर्धनदास : वाह, वाह!
अंधेर नगरी, चौपट राजा।
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा॥

हलवाई : तो बाबाजी, कुछ लेना हो तो ले लें!

गोवर्धनदास : बच्चा, भिक्षा माँगकर सात पैसा लाया हूँ, साढ़े तीन सैर मिठाई दे दे।
(महंतजी और नारायणदास एक ओर से आते हैं और दूसरी ओर से गोवर्धनदास आता है।)

महंत : बच्चा गोवर्धनदास, क्या भिक्षा लाया, गठरी तो भारी मालूम पड़ती है!

गोवर्धनदास : गुरुजी महाराज, सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।

महंत : बच्चा, नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीजें टके सेर मिलती हैं तो मैंने इसकी बात पर विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका राजा कौन है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलता है?

गोवर्धनदास : अंधेरी नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा ।

महंत : तो बच्चा, ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता है। मैं तो इस नगर में अब एक क्षण भी नही रहूँगा।

गोवर्धनदास : गुरुजी, मैं तो इस नगर को छोड़कर नहीं जाऊँगा और जगह जगए दिन भर माँगो तो भी पेट नहीं भरता। मैं तो यहीं रहूँगा।

महंत : देख, मेरी बात मान, नहीं तो पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ पर इतना कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो याद करना। (यह कहते हुए महंत चले जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

(राजा, मंत्री और नौकर लोग यथास्थान बैठे हैं। परदे के पीछे से 'दुहाई है' का शब्द होता है।)

राजा : कौन चिल्लाता है, उसे बुलाओ तो।
(दो नौकर एक फ़रियादी को लाते है।)

फ़रियादी : दुहाई, महाराज, दुहाई!

राजा : बोलो, क्या हुआ?

फ़रियादी : महाराज, कल्लू बनिए की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। न्याय हो।

राजा : कल्लू को पकड़कर लाओ!
(नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिए को पकड़ लाते हैं।)

राजा : क्यों रे बनिए, इसकी बकरी दबकर मर गई?

कल्लू बनिया: महाराज, मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनाई कि गिर पड़ी।

राजा : अच्छा कल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।
(कल्लू जाता है। नौकर कारीगर को पकड़ लाते हैं।)

राजा : क्यों रे कारीगर, इसकी बकरी कैसे मर गई?

कारीगर : महाराज, चूनेवाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, उस चूनेवाले को बुलाओ।
(कारीगर निकाला जाता है। चूनेवाले को पकड़कर लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे चूनेवाले, इसकी बकरी कैसे मर गई?

चूनेवाला : महाराज, भिश्ती ने चूने में पानी ज्यादा डाल दिया, इसी से चूना कमज़ोर हो गया।

राजा : तो भिश्ती को पकड़ो।

(भिश्ती को लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे भिश्ती, इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार गिर पड़ी और बकरी दबकर मर गई?

भिश्ती : महाराज, गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मशक इतनी बड़ी बना दी थी कि उसमें पानी ज्यादा आ गया।

राजा : अच्छा, भिश्ती को निकालो, कसाई को लाओ!

(नौकर भिश्ती को निकालते हैं और कसाई को लाते हैं।)

राजा : क्यों रे कसाई, तूने ऐसी मशक क्यों बनाई?

कसाई : महाराज, गड़रिए ने टके की ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि मशक बड़ी बन गई।

राजा : अच्छा, कसाई को निकालो, गड़रिए को लाओ!

(कसाई निकाला जाता है, गड़रिया लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे गड़रिए, ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची?

राजा : महाराज, उधर से कोतवाल की सवारी आई, भीड़-भाड़ के कारण मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल ही नहीं किया। मेरा कुछ कसूर नहीं।

राजा : इसको निकालो, कोतवाल को पकड़कर लाओ।

(कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे कोतवाल, तूने सवारी धूम-धाम से क्यों निकाली कि गड़रिए ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी?

कोतवाल : महाराज, मैंने कोई कसूर नहीं किया।

राजा : कुछ नहीं! ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दे दो!

(सभी कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं।)

तीसरा दृश्य

(गोवर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है।)

गोवर्धनदास : गुरुजी ने हमको बेकार यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है पर अपना क्या! खाते-पीते मस्त पड़े हैं।

(चार सिपाही चार ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं।)

सिपाही : चल बे चल, मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया। आज मजा मिलेगा!

गोवर्धनदास : (घबराकर) अरे, यह आफ़त कहाँ से आई? अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझे पकड़ते हो?

सिपाही : बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब उसे फाँसी देने को ले गए तो फाँसी का फंदा बड़ा निकला, क्योंकि कोतवाल साहब दुबले-पतले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज की। इस पर हुक्म हुआ कि किसी मोटे आदमी को फाँसी दे दो क्योंकि बकरी मरने के अपराध में; किसी-न-किसी को सजा होनी जरूरी है, नहीं तो न्याय न होगा।

गोवर्धनदास : दुहाई परमेश्वर की! अरे, मैं नाहक मारा जाता हूँ। अरे, यहाँ बड़ा ही अंधेर है। गुरुजी, आप कहाँ हो? आओ मेरे प्राण बचाओ।

(गोवर्धनदास चिल्लाता है। सिपाही उसे पकड़कर ले जाते हैं।)

गोवर्धनदास : हाय, बाप रे ! मुझे बेकसूर ही फाँसी देते हैं।

सिपाही : अबे चुप रह, राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है।

गोवर्धनदास : हाय, मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी, कहाँ हो? बचाओ, गुरुजी। गुरुजी!

महंत : अरे बच्चा गोवर्धनदास, तेरी यह क्या स्थिति है ?

गोवर्धनदास : (हाथ जोड़कर) गुरुजी, दीवार के नीचे बकरी दब गई, जिसके लिए मुझे फाँसी दी जा रही है। गुरुजी, बचाओ!

महंत : कोई चिंता नहीं। (भौंह चढ़ाकर सिपाहियों से) सुनो, मुझे अपने शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो। (सिपाही उसे थोड़ी देर के लिए छोड़ देते हैं। गुरुजी चेले को कान में कुछ समझाते हैं।)

महंत : नहीं बच्चा, हम बूढ़े हैं, हमको चढ़ने दे।
(इस प्रकार दोनों बहस करते हैं। सिपाही परस्पर चकित होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं।)

राजा : यह क्या गोल-माल है ?

सिपाही : महाराज, चेला कहता है, मैं फाँसी चढ़ूँगा और गुरु कहता है, मैं चढ़ूँगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है!

राजा : (गुरु से) बाबाजी, बोलो, आप फाँसी क्यों चढ़ना चाहते हैं ?

महंत : राजा, इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरा, सीधा स्वर्ग जाएगा।

मंत्री : तब तो हम फाँसी चढ़ेंगे।

गोवर्धनदास : नहीं, हम। हमको हुक्म है!

कोतवाल : हम लटकेंगे! हमारे कारण से तो दीवार गिरी।

राजा : चुप रहो सब लोग! राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है। तो हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी-जल्दी करो!
(राजा को नौकर लोग फाँसी पर लटका देते हैं। परदा गिरता है।)

('चुने हुए बाल एकांकी')

शब्दार्थ-टिप्पणी

महंत मंदिर का बड़ा पुजारी **कुंजड़िन** तरकारी बेचनेवाली स्त्री **खाजा** एक प्रकार की मिठाई **भिश्ती** मशक में भरकर पानी ढोनेवाला **गड़रिया** भेड, बकरी पालनेवाला **नाहक** व्यर्थ **टके सेर** टका (पुराने दो पैसों के बराबर का एक सिक्का) काफी सस्ता **मशक** चमड़े की खाल का बड़ा थैला **दुहाई** न्याय के लिए की गई पुकार या प्रार्थना **सबब** कारण **कसूर** दोष **हुज्जत** दलील, तकरार, बहस **फ़रियादी** न्याय माँगनेवाला

मुहावरा

मोल लेना दाम देकर खरीदना

कहावत

अंधेरी नगरी चौपट राजा कर्तव्यभ्रष्ट शासक के राज्य में सदा **टके सेर भाजी, टके सेर खाजा,...** अर्थात्... जहाँ अव्यवस्था तथा लूट-खसोट का बोल-बाला रहता हैं।

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए:**

   (1) महंत ने नगर की असलियत जानने पर क्या फ़ैसला लिया ?

(2) अंधेरी नगरी में भाजी और खाजा किस भाव से बिकता था?

(3) कसाई ने भेड़ किससे मोल ली थी?

(4) महंत ने गोवर्धनदास को क्या सलाह दी थी?

(5) राजा फाँसी चढ़ने को क्यों तैयार हो गया?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) गोवर्धनदास ने खुश होकर अंधेरी नगरी में ही रहने का फैसला क्यों लिया?

(2) बकरी की मौत के लिए किस-किसको अपराधी ठहराया गया? राजा ने किसे-किसे और क्यों फाँसी चढ़ाने का फैसला किया?

(3) गोवर्धनदास पर पछ्ताने की बारी क्यों आ गई?

(4) महंत गोवर्धनदास की जान बचाने में सफल कैसे हो गए?

(5) पाठ को 'अंधेरी नगरी' शीर्षक क्यों दिया गया?

3. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) अँधेरी नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

(2) राजा के जीतेजी और कौन स्वर्ग जा सकता है? हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी करो।

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

(1) महंत अंधेरी नगरी में .... रहना नहीं चाहते? (यथासमय, क्षणभर)

(2) मंत्री और नौकर लोग .... बैठे हैं। (इकठ्ठा, यथास्थान)

(3) कोतवाल तूने .... धूमधाम से क्यों निकाली? (मीठाई, सवारी)

(4) मुझे अपने .... को अंतिम उपदेश देने दो।

(5) शुभघड़ी में जो मरा, सीधा........... जाएगा । (महल, स्वर्ग)

5. निम्नलिखित शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए :

(1) न्याय माँगनेवाला

(2) तस्कारी बेचनेवाली स्त्री

(3) चमड़े की खाल का बड़ा थैला

(4) भेड़-बकरे चरानेवाला

(5) मीठाई बेचनेवाला

योग्यता-विस्तार

- प्रस्तुत एकांकी का मंचन कीजिए।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'यथा राजा तथा प्रजा' कहावत समझ कर कक्षा मे अभिव्यकत कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- भारतेन्दु, हरिश्चंद्र नाटक, अंधेरी नगरी के संवाद विद्यार्थियों के पास तैयार करवाइए और विद्यार्थी प्रार्थनासभा या शालेय अवसर पर प्रस्तुत करें।

●

19	# महाकवि कालिदास

नरपत बारहठ 'हडवेचा'

राजस्थानी संस्कृति के शोधकर्ता नरपत बारहठ 'हडवेचा'ने एम.ए.बी.एड्. की उपाधि प्राप्त की है। जयनारायण विश्व विद्यालय, जोधपुर से वे संलग्न है। उनकी विशेष रूचि काज लेखन में हैं। वे संस्कृति के प्रवाहों और प्रवाहों को समझने में यत्नशील है। महापुरुषों को नमन करते हुए आपने लिखा हैं- जिन्होंने देशसेवा की खातिर अपना घर, परिवार छोड़कर एशो-आराम त्याग कर भूखे-प्यासे नंगे-पाँव रहकर देश को गुलामी की जंज़ीरों से मुक्त कराने के लिए सर्वस्व कुरबान किया वे वंदनीय हैं। 'महापुरुषों की जीवनियां' आपकी प्रसिद्धि कृति है। इस संग्रह में कुल 60 प्रसिद्ध महापुरुष को जीवनचरित्र अंकित है। प्रस्तुत जीवनी 'महाकवि कालिदास' में कालिदास के जन्म और परिचय का एवं उनकी प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं का विवरण हैं।

इस कृति से यह संदेश मिलता है कि किसी बच्चे को बुद्धु(मूर्ख) मानना नहीं चाहिए, क्योंकि वह मौका मिलते ही हीरे की तरह चमक सकता है।

कालिदास को हम मात्र संस्कृत के महाकवि के रूप में जानते हैं। स्वयं महाकवि कालिदास ने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा है। हर्षचरित के शुरू में कवि बाण ने कालिदास का उल्लेख किया है। इससे पता चलता है कि कालिदास बाण से पहले हुए है। एक स्थान पर स्वयं कालिदास ने अपने अभिभावक के रूप में ''विक्रम'' नाम का उल्लेख किया है। वह कौन-सा विक्रम हैं, इस बात का अभी पूरी तरह पता नहीं चल पाया है। फिर भी उन्हीं राजा विक्रमादित्य और राजा भोज का समकालीन मानकर कितनी ही कथाओं का नायक बनाया गया है। विभिन्न भाषाओं में पहेलियों और लोककथाओं में उनकी विद्वता, कविता और चमत्कारिक प्रसंगों का वर्णन मिलता है।

जन्म और परिचय :

कुछ विद्वानों ने कालिदास का जन्म 365 ई. तथा निधन 445 ई. माना है। महाकवि कालिदास के जन्म स्थान के बारे में ठीक ठीक पता नहीं चलता। कुछ विद्वानों ने उनका जन्मस्थान उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) माना है, जो सही लगता है क्योंकि मेघदूत में स्वयं कवि ने उज्जयिनी को विशेष दर्शनीय कहा है और लंबा रास्ता पड़ने पर भी उधर से जाने के लिए बादल से अनुरोध किया है।

उज्जयिनी में उन दिनों राजा विक्रमादित्य का राज्य था। वहाँ की प्रजा सब प्रकार से सुखी थी। साहित्य और कला की उन्नति चरम सीमा पर पहुँची थी। राजा विक्रमादित्य ने अपने नाम से ही विक्रम संवत् चलाया था। समय-समय पर उन्होंने सोने के जो सिक्के चलवाये थे, उनसे उनके राज्यकाल का ठीक-ठीक पता चलता हैं। विक्रमादित्य के शासनकाल में जितना वैभव देश में था, जितनी साहित्य तथा कला की उन्नति हुई, उतनी कभी नहीं हुई। एक से बढ़कर एक कवि, साहित्यकार और वैज्ञानिक इस युग में उत्पन्न हुए। राजा विक्रमादित्य स्वयं साहित्य और संगीत के अच्छे जानकार थे। संस्कृत भाषा की उन्नति भी इस काल में ही अधिक हुई।

अपने पूर्व जीवन में बुद्धु माने जानेवाले कालिदास विक्रमादित्य के दरबारी कवियों में सर्वश्रेष्ठ थे। कालिदास के अतिरिक्त आठ और कवि भी दरबार में थे जो नवरत्न कहलाते थे।

कालिदास के विषय में कहा जाता है कि वे युवावस्था तक निरक्षर थे। जिस डाल पर बैठते उसे ही काटते थे। निरक्षर होने पर भी वह इतने विद्वान और महाकवि किस तरह बन गये इसकी भी एक बड़ी विचित्र और रोचक कहानी है।

उन दिनों शारदानंद नाम के एक राजा थे। उनकी एक गुणवती और विद्वान पुत्री थी, जिसका नाम विद्योत्तमा था। वह बहुत सुंदर और रूपवती भी थी। उसके रूप, गुण और ज्ञान की प्रशंसा दूर-दूर के देशों तक फैली हुई थी। विद्योत्तमा को अपने रूप, गुण और ज्ञान का बड़ा घमंड था। अपने विवाह के सम्बन्ध में उसने एक घोषणा कर रखी थी कि जो उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा उसी के साथ वह अपना विवाह करेगी।

उसकी इस घोषणा की जानकारी जैसे-जैसे पास पड़ोस के देशों तक पहुँचती गयी, वहाँ-वहाँ के विद्वान

तथा पंडित विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ करने के लिए आने लगे, लेकिन विद्वान या पंडितों को बड़ी ग्लानि का अनुभव हो रहा था, और वे इसका बदला लेने का उपाय सोचने लगे थे। विद्वानों और पंडितों ने मिलकर तय किया कि विद्योत्तमा का विवाह किसी मूर्ख से करवा दिया जाय तो इसका घमंड टूट जाएगा और वे अपने अपमान का बदला भी ले सकेंगे। अत: अब वे ऐसे एक मूर्ख की तलाश में रहने लगे। संयोग से उन्हें एक दिन एक ऐसा ही मूर्ख युवक मिल गया। वह पेड़ की जिस डाल पर बैठा था उसे ही काट रहा था। पंडितों तथा विद्वानों को लगा कि उससे बड़ा मूर्ख और कौन होगा? इसलिए पंडितों ने उसे पेड़ से नीचे उतारा ओर समझा बुझाकर एक सुंदर राजकुमारी से उसका विवाह करा देने की बात कहकर तथा लालच देकर अपने साथ चलने को राजी किया। पंडितों ने उस मूर्ख युवक को यह बात अच्छी तरह समझा दी कि वह वहाँ कुछ नहीं बोलेगा और गूँगा बना रहेगा, नहीं तो उसका विवाह नहीं होगा। वह मूर्ख युवक बड़ा खुश हुआ। उसने पंडितों की बात मान ली ओर उनके द्वारा दिये गये अच्छे-अच्छे कपड़े पहन लिये। पंडित उसे विद्योत्तमा के पास शास्त्रार्थ के लिए ले गये।

राजकुमारी विद्योत्तमा को उस मूर्ख युवक का परिचय देते हुए पंडितों ने बताया कि ये हमारे गुरु है और बहुत बड़े विद्वान है, शास्त्रों के जानकार है। आपके साथ शास्त्रार्थ करने यहाँ आये हैं, लेकिन उन दिनों मौन व्रत चलने के कारण ये संकेत से ही शास्त्रार्थ करेंगे।

विद्योत्तमा पंडितों की यह छल भरी बात नहीं समझ सकी और शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो गयी। उसने युवक को एक उँगली दिखायी जिसका भाव था कि ईश्वर एक है।

उस मूर्ख युवक ने समझा कि यह मेरी एक आँख फोड़ डालना चाहती है। उसने दो उँगलियाँ दिखाते हुए उसकी दोनों आँखें फोड़ डालने का संकेत किया। पंडितों ने इस संकेत का अर्थ विद्योत्तमा को समझाते हुए कहा- ''आपके प्रश्न के उत्तर में हमारे गुरुजी का कहना है कि ईश्वर और जीव दो है।''

इस बार राजकुमारी विद्योत्तमा ने पाँच उँगलियाँ दिखाकर पाँचों तत्त्वों का संकेत किया। उस मूर्ख ने समझा कि वह मेरे मुँह पर तमाचा मारने का संकेत कर रही है। उसने मुट्ठी बाँधकर तमाचे का जवाब घूँसे से देने का संकेत किया। पंडितों ने इस बार भी विद्योत्तमा को इस संकेत का अर्थ बताते हुए कहा- ''आपने पाँच उँगलियों से पाँच तत्त्वों का संकेत किया था, लेकिन हमारे गुरुजी का कहना है कि पाँचों तत्त्वों के मिलने से ही सृष्टि का निर्माण होता है, अलग-अलग रहने में नहीं।

इस तरह उपरोक्त शास्त्रार्थ में विद्योत्तमा ने उस मूर्ख युवक से अपनी हार मान ली और दोनों का विवाह धूम-धाम से पंडितों ने करवा दिया। एक दिन की बात है, एक ऊँट की बोली सुनकर वह मूर्ख युवक अपना मौन व्रत भूलकर यकायक बोल बैठा- उट्र... उट्र...।

उसको बोलते सुनकर विद्योत्तमा चौंक उठी। उसे पता चला कि उसका पति कोई विद्वान पंडित नहीं बल्कि एक बहुत बड़ा मूर्ख हैं। पंडितों की छल भरी बातों का अर्थ अब उसकी समझ में आ गया। विद्योत्तमा को बहुत मानसिक दु:ख पहुँचा और उसने अपने महल में कालिदास के प्रवेश पर रोक लगा दी और द्वारबंध कर लिये। कठोर उपासना से उसे माँ काली का वरदान प्राप्त हुआ और उसे काली का दास होने के कारण कालिदास नाम प्राप्त हुआ। शीघ्र की कालिदास सारी विधाओं को सीखकर प्रवीण हो गये। राजनीति, धर्मशास्त्र ओर साहित्य का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर वह फिर से विद्योत्तमा के पास लौटे। द्वार तब भी बंद था। कवि ने अपने विद्वान होने के प्रमाणस्वरूप संस्कृत में द्वार खोलने के लिए विद्योत्तमा से प्रार्थना की, 'अनावृत्त कपाट द्वार देहि।'

अंदर से पत्नी विद्योत्तमा ने पूछा, 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेष:।'

इस पर महाकवि कालिदास ने क्रमश- 'कुमारसम्भव', 'मेघदूत' और 'रघुवंश' की रचना विद्योत्तमा को सुनायी। विद्योत्तमा को जब उनके पंडित होने का विश्वास हो गया तो उसने द्वार खोलकर महाकवि का स्वागत किया।

कालिदास को हर क्षेत्र का गहरा अनुभव था। प्रकृति का जैसा वर्णन उनके साहित्य में मिलता है वैसा कहीं नहीं मिलता। उन्हें प्रकृति के बिना मनुष्यजीवन अधूरा दिखायी पड़ता था। कालिदास की उपमाएँ विश्व विख्यात हैं। उनकी कोई तुलना नहीं। उसका कोई जोड़ नहीं। चरित्रचित्रण में भी महाकवि कालिदास की तुलना नहीं की जा सकती! उनकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। उसके पात्रों का व्यक्तित्व अपनापन लिए रहता है। हर बात बड़ी ही स्वाभाविकता से उपस्थित होती है। कालिदास अपने काव्य तथा नाटक के द्वारा बार-बार यही बताना चाहते हैं कि राजा प्रजा का शासक ही नहीं उसका रक्षक और पिता भी है। उन दिनों समाज में नारी का क्या स्थान था इस बात का पता भी हमें कवि कालिदास की रचनाओं में मिलता है। समाज में नारी को सम्मान और श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था और उसे नृत्य, संगीत चित्रकला आदि की शिक्षा दी जाती थी।

महाकवि कालिदास के सात प्रमुख ग्रंथ हैं। उनमें से पहला ग्रंथ है 'ऋतुसंहार'। यह एक उत्तम काव्य है। इसमें कालिदास ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है। ऋतुओं का तथा प्रकृति का जितना सुंदर चित्रण काव्य में है, उतना कालिदास के अन्य ग्रंथों में नहीं है।

'मालविकाग्निमित्र' कालिदास का दूसरा ग्रंथ और पहला नाटक है। उसमें पाँच अंक और विदिशा के राजा अग्निमित्र तथा विदर्भ की राजकुमारी मालविका की प्रेमकथा है। तीसरा ग्रंथ 'विक्रमोर्वशीयम्' कालिदास का दूसरा नाटक है, इसमें पाँच अंक हैं तथा महाराज पुरुरवा और उर्वशी की प्रेमकथा का चित्रण किया गया है। 'कुमारसम्भव' का काव्य है और इसमें शिवपार्वती के विवाह से लेकर कुमार कार्तिकेय के जन्म और उसके द्वारा तारकासुर के वध तक की कथा का वर्णन है। 'मेघदूत' कालिदास का पाँचवा ग्रंथ है। यह भी एक खंडकाव्य है और इसके शुरु में कालिदास ने बादल को दूत बनाकर कुबेर की नगरी अलकापुरी तक का मार्ग बताया है। इसके उत्तरार्ध में यक्ष ने अपनी विरहिणी प्रिया को पहचानने के उपाय मेघ को बताये हैं और अपना संदेश दिया है। इस काव्य में वर्षाकाल ओर विरह का वर्णन खूब निखरा है। इसमें भारत के भूगोल की भी अच्छी जानकारी दी गयी है।

'रघुवंश' एक महाकाव्य है। कवि कालिदास ने रघुवंश की कथा कहने से पहले ही कह दिया है कहाँ तो सूर्य से उत्पन्न हुआ यह वंश, कहाँ मोटी बुद्धिवाला। मैं तिनकों से बनी छोटी-सी नाव लेकर अपार समुद्दि को पार करने की बात सोच रहा हूँ। सूर्यवंश के दिलीप से लेकर कुश और उनके अनेक उत्तराधिकारियों तक की कथा रघुवंश में है।

महाकवि कालिदास का सातवाँ ओर सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'। यह उनका तीसरा नाटक है और इसमें सात अंक है। महाकवि ने इस नाटक में राजा दुष्यन्त तथा शकुन्तला की कथा कही है। इस तरह महाकवि कालिदास आज भी हमारे संस्कृत साहित्य में अमर है। उनकी रचनाओं में तत्कालीन साहित्य, शासन और राजनीति, समाज और जनविश्वास, भूगोल, ललितकला, स्थापत्य आदि सभी की झलक मिलती है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अभिभावक बच्चों के पारिवारिक रक्षक **शास्त्रार्थ** शास्त्र संबंधी चर्चा **अनुरोध** आदेश **ग्लानि** दुःख, पीड़ा **संकेत** इशारा **यकायक** सहसा **निरक्षर** अनपढ़ **रोचक** आकर्षक

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

   (1) कालिदास के जन्मस्थान का नाम बताइये।

   (2) मेघदूत का नायक कौन है?

(3) 'विक्रम संवत' का प्रारंभ किसने करवाया था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कालिदास की अज्ञता किस बात से प्रकट होती है?

(2) विद्योत्तमा का परिचय दीजिए।

(3) महाकवि कालिदास की कृतियों के नाम दीजिए।

3. निम्नलिखित शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(1) जिसमें सभी का हित समाया हुआ हो

(2) विद्वानों द्वारा की जानेवाली शास्त्रों की चर्चा

(3) विद्या में जो उत्तम हो

4. निम्नलिखित विधानों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) विद्योत्तमा के एक उँगली दिखाने में .... भाव था।

(2) सृष्टि का निर्माण .... तत्त्वों के मेल से होता है।

(3) ऊँट की बोली सूनकर मूर्ख युवक .... बोल उठा।

योग्यता-विस्तार

- अपनी कक्षा से प्रत्येक छात्रा की अच्छाई बताने का अवसर सभी को दीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'महाकवि कालिदास' की काव्यकला विषयक विद्वानों की प्रशस्ति - उपमा कालिदासस्य.... के बारे में जानकारी दें।
- 'कोई नीरा बुद्धु' जन्म भरके लिए नहीं होता, कठिन तपश्चर्या और मेहनत से महान बनता है, महाकवि कालिदास के जीवन से प्राप्त संदेश बोध के रूप में दें।
- 'महाकवि कालिदास का संस्कृत साहित्य में योगदान' विषयक चर्चा-संगोष्ठि का आयोजन करें।

●

वाक्य तथा वाक्य के प्रकार

वाक्य विचार :

- शब्दों का ऐसा व्यवस्थित, सार्थक समूह जो किसी विचार या भाव को पूर्णत: व्यक्त कर सकता है; वाक्य कहलाता है।
- **उदाहरण** - भारत की संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। इस वाक्य में प्रयुक्त सभी शब्द (पद) अर्थवान (सार्थक) हैं एवं व्यवस्थित शब्दों का यह समूह किसी विचार को प्रकट कर रहा है।

वाक्य के प्रमुख तत्त्व :

(क) सार्थकता: सार्थकता से अभिप्राय है- वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थवान होना। वाक्य में केवल सार्थक शब्दों का ही प्रयोग किया जाता है पर कभी-कभी निरर्थक शब्दों का प्रयोग भी विशेष संदर्भ में सार्थक बन जाता है। जैसे-

- कुछ **<u>पानी-पानी</u>** पीकर जाना।
- मेरे सामने ज्यादा **<u>चूँ-चपड़</u>** करने की कोशिश मत करना।

उपर्युक्त वाक्यों में पानी-पानी, चूँ-चपड़ निरर्थक होते हुए भी सार्थक की तरह प्रयुक्त हुए हैं।

(ख) योग्यता : वाक्य में जिन शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है, उनमें अर्थ प्रदान करने की योग्यता या सामर्थ्य होनी चाहिए। जैसे-

'मैंने पानी खाया।'- वाक्य में प्रयुक्त तीनों शब्द सार्थक हैं पर शब्दों के इस समूह में वांछित अर्थ देने की योग्यता या क्षमता नहीं है। जबकि 'मैंने पानी पिया'- वाक्य में अर्थ प्रदान करने की योग्यता है, अत: यह वाक्य है।

(ग) आकांक्षा : आकांक्षा से आशय है- वाक्य अपने आप में पूरा होना चाहिए अर्थात् उसमें किसी शब्द की कमी के कारण अर्थ प्राप्ति की जिज्ञासा न बनी रही। जैसे-

'चाहता है', 'पढ़ना चाहता है', 'वह पढ़ना चाहता है'- तीनों में तीसरा वाक्य है। पहले दोनों में 'कौन', 'क्या'?

(घ) निकटता : वाक्य में शब्दों को बोलने और लिखने में उचित निकटता होनी चाहिए। यदि कहीं उचित विराम की आवश्यकता हो, तो वहाँ विराम चिह्नों का प्रयोग अपेक्षित है। बहुत रुक-रुककर या जल्दी-जल्दी बोलने से वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

(ङ) पदक्रम : वाक्य का सही अर्थ तभी स्पष्ट होगा जब उसमें प्रयुक्त सभी शब्द (पद) उचित क्रमों में प्रयुक्त किए गए हों। जैसे-

- मैंने केवल एक पत्र लिखा है।
- केवल पत्र एक है लिखा मैंने।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में एक जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। प्रथम वाक्य से अर्थ निकल रहा है कि मैंने केवल एक पत्र लिखा है, एक से अधिक नहीं या पत्र लिखने के अलावा और कुछ नहीं किया। जबकि दूसरे वाक्य से कोई अभीष्ट या इच्छित अर्थ नहीं निकल रहा है।

(च) अन्वय : अन्वय का अर्थ है 'मेल'। वाक्य में प्रयुक्त किए जानेवाले शब्दों में कर्ता, कर्म, वचन, कारक, क्रिया आदि में उपयुक्त मेल होना चाहिए अन्यथा वह वाक्य शुद्ध नहीं कहलाएगा। जैसे-

- 'हम खाना खाता हूँ' - वाक्य में क्रिया का कर्ता से मेल नहीं है। 'हम' कर्ता के साथ 'खाते हैं' का प्रयोग होना चाहिए।

वाक्य के घटक :

जिन अवयवों को मिलाकर वाक्य की रचना होती है उन्हें वाक्य के घटक कहते हैं। संरचना की दृष्टि से वाक्य के प्रधान रूप से दो ही घटक होते हैं-

(1) उद्देश्य

(2) विधेय

अब इन दोनों के बारे में समझे।

(1) उद्देश्य: वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए वही उस वाक्य का 'उद्देश्य' है। इसके अंतर्गत कर्ता तथा कर्ता का विस्तार (विशेषण, संबंधबोधक, भावबोधक आदि) आ जाते हैं।

(2) विधेय: उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए वह 'विधेय' है। इसके अंतर्गत क्रिया, क्रिया विस्तार, कर्म, कर्म विस्तार आदि आ जाते हैं।

उदाहरण 1. सचीन आपके स्कूल आ रहा है।

2. बूढ़ा आदमी धीरे-धीरे चल रहा है।

3. हमारे हिंदी के अध्यापक ने हमें मनोरंजक कहानी सुनाई।

4. तारा का भाई नरेश कहानी की पुस्तक धीरे-धीरे पढ़ता है।

वाक्य क्रम	**उद्देश्य**		**विधेय**			
	कर्ता	**कर्ता का विस्तार**	**क्रिया**	**क्रिया का विस्तार**	**कर्म**	**कर्म का विस्तार**
1.	सचीन	-	आ रहा है	-	स्कूल	आपके
2.	आदमी	बूढ़ा	चल रहा है	धीरे-धीरे	-	-
3.	अध्यापकने	हमारे हिन्दी के	सुनाई	-	हमें कहानी	मनोरंजक
4.	नरेश	तारा का भाई	पढ़ता है	धीरे-धीरे	पुस्तक	कहानी की

वाक्य के प्रकार :

वाक्य का विवेचन मुख्य रूप से दो स्तरों पर किया जाता है- (1) अर्थ के आधार पर और (2) रचना के आधार पर । इस दो स्तरों के आधार पर वाक्य के प्रकार निम्नांकित है-

अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार :

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद है:

(1) विधानवाचक वाक्य : जिस वाक्य में कार्य के होने का अथवा करने का सामान्य कथन हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

- प्रियोदा सेवाभावी थी।
- डॉक्टरने आराम करने के लिए कहा था।
- वृक्ष हमें स्वच्छ वायु प्रदान करते हैं।

(2) निषेधवाचक वाक्य : जिस वाक्य में कार्य के न होने का या न करने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

उदाहरण - मैं आज खाना नहीं खाऊँगा।

- मरना मुझे कठिन नहीं लगता।
- वह घर नहीं जाएगा।

(3) प्रश्नवाचक वाक्य : यदि वाक्य में कोई प्रश्न किया जाय तो वह 'प्रश्नवाचक वाक्य' कहलाता है। इस तरह के वाक्यों में क्या, कौन, कहाँ, कैसे, कब, क्यों, किसलिए आदि का प्रयोग होता है। जैसे-

उदाहरण - इस नगरी का राजा कौन है?
- राजा का नाम क्या है?
- आप कहाँ रहते हैं?
- इस की बकरी कैसे मरी?
- तूने ऐसी मशक क्यों बनाई?
- आप किसलिए वहाँ जाया करते हैं?

(4) विस्मयादिवाचक वाक्य : यदि वाक्य में विस्मय, शोक, हर्ष, घृणा, खुशी आदि का भाव अभिव्यक्त हो तो उसे 'विस्मयादिवाचक वाक्य' कहा जाता है। जैसे-

उदाहरण - अरे! इतना सुंदर गुलमर्ग!
- ओह! यह क्या हो गया।
- वाह ! कितना सुंदर घर।

(5) इच्छावाचक वाक्य : जिस वाक्य में वक्ता की इच्छा, आशा, शुभकामना या शाप आदि अभिव्यक्त हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

उदाहरण - आपकी यात्रा मंगलमय हो।
- गुरुजी आ जाएँ तो अच्छा हो।
- भगवान करे, तुम सफल हो।
- जा, तुझे नरक में भी जगह न मिले।

(6) संदेहवाचक वाक्य : जिस वाक्य से किसी कार्य के होने में संदेह या संभावना का बोध हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

उदाहरण - संभवतः आज वर्षा होगी।
- लगता है, मैंने इस व्यक्ति को कहीं देखा है।
- अब तक वह सो गया होगा।

(7) संकेतवाचक वाक्य : जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरे पर निर्भर करे अथवा एक कार्य का संकेत दूसरे कार्य से मिले, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे-

उदाहरण - परिश्रम करोगे, तो अवश्य सफलता मिलेगी।
- यदि वर्षा अच्छि हो तो फ़सल भी अच्छी होगी।
- यदि मौसम ठीक रहा, तो हम घूमने जाएँगे।

(8) आज्ञावाचक या विधिवाचक वाक्य : जिस वाक्य के द्वारा आज्ञा या अनुमति, प्रार्थना या निर्देश आदि का भाव प्रकट होता है, उसे आज्ञावाचक या विधिवाचक वाक्य कहा जाता है। जैसे-

उदाहरण - भिश्ती को निकालो, कसाई को लाओ। (आज्ञा)
- तुम जा सकते हो। (अनुमति)
- कृपया मेरी सहायता कीजिए। (प्रार्थना)
- यहाँ मत बैठो। (निर्देश)

रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार :

रचना या स्वरूप की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं-

(1) सरल या साधारण वाक्य : जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय हो उसे 'सरल या साधारण वाक्य' कहते हैं। जैसे- 'पिताजी पार्क में बैठे हैं।' विधान में 'पिताजी'-उद्देश्य है और 'पार्क में बैठे हैं' - विधेय है।

सरल वाक्य में एक वाक्य ही होता है। वाक्य के उद्देश्य में कर्ता-कर्ता विस्तार तथा विधेय में क्रिया-क्रिया का विस्तार-कर्म-कर्म का विस्तार आदि आ जाते हैं।

उदाहरण 1. भार्गव ने पढ़ा । (कर्ता-क्रिया)

2. भार्गव पढ़ रहा है। (कर्ता, क्रिया-विस्तार)
3. पड़ोस में रहनेवाला भार्गव पढ़ रहा है। (विस्तार कर्ता-क्रिया-विस्तार)
4. भार्गव ने पुस्तक पढ़ी। (कर्ता-कर्म-क्रिया)
5. भार्गव ने पिताजी को पुस्तक दी। (कर्ता-कर्म-कर्म-क्रिया)
6. भार्गव ने अपने प्रिय मित्र को कहानी की पुस्तक दी। (कर्ता-कर्म का विस्तार, कर्म-कर्म का विस्तार-कर्म-क्रिया)

(2) संयुक्त वाक्य : जिस वाक्य में दो उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक (योजक) अव्यय से जुड़े होते हैं, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं। जैसे- मैं पढ़ रहा हूँ और तुम लिख रहे हो।' वाक्य में दो उपवाक्य हैं एवं 'और' समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े हैं, अत: निर्देशित विधान संयुक्त वाक्य है। संयुक्त वाक्य के अंतर्गत जितने उपवाक्य होते हैं, वे स्वतंत्र होते हैं।

उदाहरण 1. मैं हूँ सत्यकेतु और पत्नी है कामना।

2. आपको सत्य बोलना चाहिए; परन्तु वह अप्रिय न हो।
3. तुम नहीं जा सके तो बेटे को भेज देते।
4. सालभर का खाता बंद करना है अत: विवरण शीघ्र भेजिए।

कभी-कभी संयुक्त वाक्यों में 'समुच्चयबोधक' अव्यय का लोप भी कर दिया जाता है, जैसे-

1. दुनिया में रहनेवाले रहेंगे, जानेवाले चले जाएँगे। ('और' का लोप)
2. क्या सोचा था, क्या हो गया। ('पर' का लोप)
3. काम किया है, पैसा तो लूँगा ही। ('इसलिए' का लोप)

(3) मिश्र वाक्य : जिस वाक्य की रचना एक से अधिक ऐसे उपवाक्यों से हुई हो, जिसमें एक प्रधान तथा अन्य वाक्य गौण हों, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं।

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और उसके आश्रित उपवाक्य हों, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं। प्रधान उपवाक्य में मुख्य कथन होता है तथा जिसका समर्थन, पूर्ति या विस्तार दूसरा आश्रित उपवाक्य करता है। इनमें से कोई भी उपवाक्य स्वतंत्र नहीं होता। दोनों को एक दूसरे की अपेक्षा होती है।

उदाहरण 1. मैं देखता हूँ कि तुम मेहनत नहीं करते हो।

2. हिरन ही एकमात्र ऐसा पशु है, जो कुलँचों भरता है।
3. सविता को पुरस्कार मिला क्योंकि उसने एक अच्छा गीत सुनाया था।
4. यह वही भारत देश है, जिसे कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था।
5. सूरज उगा इसलिए अँधेरा भागा।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) वाक्य किसे कहते हैं?

(2) वाक्य के घटक बताइए।

(3) सरल वाक्य किसे कहते हैं?

(4) 'इस उपवन में सुंदर फूल खिले हैं।' वाक्य में से उद्देश्य और विधेय ढूँढ़िए।

2. अर्थ के आधार पर वाक्यों के प्रकार लिखिए :

(1) अहा! कितना सुंदर बच्चा है।

(2) एक गिलास दूध लाओ।

(3) राम अयोध्या के राजा थे।

(4) वहाँ पेड़-पौधें नहीं थे।

(5) आप कहाँ रहते हैं?

(6) आपकी यात्रा मंगलमय हो।

(7) शायद मुझे ही अहमदाबाद जाना होगा।

(8) यदि वर्षा अच्छी हो तो फ़सल भी अच्छी होगी।

3. रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार लिखिए :

(1) घोड़ा ताँगा खींचता है।

(2) श्याम माखनचोर है इसलिए वह कहीं छिप जाता है।

(3) राकेश को बुखार आया इसलिए उसे अस्पताल भर्ती करवाया गया।

(4) पानी बरस रहा है।

(5) वह बाज़ार गई और उसने फल खरीदें।

(6) ऋषि कहते है कि सदा सत्य की विजय होती है।

(7) आचार्य ने कहा कि स्कूल तीन दिन बंद रहेगा।

(8) आप दिल्ली कब जा रहे हैं?

4. सही उत्तरों का चयन कीजिए :

(1) अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

(अ) दो　　(ब) चार

(क) छः　　(ड) आठ

(2) रचना की दृष्टि से वाक्य के कितने प्रकार हैं?

(अ) एक　　(ब) दो

(क) तीन　　(ड) चार

(3) मनोज अध्यापक है- उद्देश्य छाँटिए।

(अ) मनोज　　(ब) अध्यापक

(क) है　　(ड) अध्यापक है

(4) गायत्री शिक्षिका है- विधेय छाँटिए।

(अ) गायत्री (ब) शिक्षिका

(क) है (ड) शिक्षिका है

(5) इन वाक्यों में कौन-सा वाक्य संयुक्त वाक्य है?

(अ) घर जाने पर वह खा लेता है।

(ब) वह खा लेता है जब भी घर से आता है।

(क) वह प्रतिदिन घर से खाकर आता है।

(ड) वह घर जाता है और खाकर आता है।

(6) इन वाक्यों में कौन-सा वाक्य मिश्र वाक्य है?

(अ) परिश्रम करने पर छात्र उत्तीर्ण हो गए।

(ब) उस छात्र ने परिश्रम किया और वह उत्तीर्ण हो गया।

(क) परिश्रम करनेवाले छात्र उत्तीर्ण हो गए।

(ड) जिन छात्रों ने परिश्रम किया वे उत्तीर्ण हो गए।

(7) 'भगवान आपका कल्याण करे'.... यह किस प्रकार का वाक्य है?

(अ) विधानवाचक (ब) संदेहवाचक

(क) इच्छावाचक (ड) विस्मयादिवाचक

(8) 'दादाजी स्वस्थ नहीं है'... यह किस प्रकार का वाक्य है?

(अ) प्रश्नवाचक (ब) निषेधवाचक

(क) संदेहवाचक (ड) संकेतवाचक

•

20 धरती की शान

पंडित भरत व्यास

पंडित भरत व्यासजी हिन्दी साहित्य जगत के जाने-माने गीतकार रहे हैं। आपका जन्म राजस्थान के चुरू नामक क स्बे में हुआ था। आपने कई गीत-काव्यों की रचना की है। आपकी गीत रचनाएँ हिन्दी फिल्मों में भी ली गई हैं। आपकी रचनाओं में विभिन्न मानव मूल्य प्रस्थापित हुए हैं।

प्रस्तुत गीत सन् 1958 में आई-हिन्दी फिल्म गाँव की गोरी से लिया गया है । इस गीत में मनुष्य की महत्ता को देखते हुए मनुष्य को सबसे बुद्धिमान बताया है। मनुष्य ने अपनी बुद्धि और कठोर परिश्रम के बल पर जल, थल और नभ में तमाम उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। मनुष्य ने अपनी शक्ति से प्रकृति को बहुत सीमा तक अपने अनुकूल ढालने में सफल हुआ है। कवि बताते हैं- मनुष्य की शक्ति के सामने कोई भी कार्य असंभव नहीं है। मनुष्य जो चाहे, वह प्राप्त कर सकता है। यानी कि मनुष्य ही धरती की शान है। यही भाव काव्य में अन्तर्निहित है। यही हमारी महानता का प्रमाण है।

धरती की शान तू भारत की संतान,
तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान है रे,
मनुष्य तू बड़ा महान है॥

तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को फोड़ दे,
तू जो चाहे नदियों के मुख को भी मोड़ दे,
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे,
तू जो चाहे धरती को अम्बर से जोड़ दे,
अमर तेरे प्राण, मिला तुझको वरदान
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान है रे ॥1॥

नयनों में ज्वाल, तेरी गति में भूचाल,
तेरी छाती में छिपा महाकाल है,
पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि-सा भाल,
तेरी भृकुटी में तांडव का ताल है,
निज को तू जान, जरा शक्ति पहचान
तेरी वाणी में युग का आह्वान है रे ॥2॥

धरती-सा धीर, तू है अग्नि-सा वीर,
तू जो चाहे तो काल को भी थाम ले,
पापों का प्रलय रुके, पशुता का शीश झुके,
तू जो अगर हिम्मत से काम ले,
गुरु-सा मतिमान, पवन-सा तू गतिमान,
तेरी नभ से भी ऊँची उड़ान है रे ॥3॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

हिमगिरि हिमालय पर्वत **ज्वाल** अग्निशिखा, लौ **शान** गौरव, ऐश्वर्य, वैभव **मुख** प्रवाह, **भृकुटी** भौंह, **काल** समय (वह सम्बन्ध सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य और वर्तमान की प्रतीति होती है।) **मतिमान** बुद्धिमान, विचारवान **प्रलय** नाश, विनाश **आह्वान** पुकार **भाल** मस्तक, कपाल **ललाट** निज, अपना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कवि की दृष्टि में सर्वाधिक महान कौन है ?

(2) आप क्या-क्या कर सकते हैं ?

(3) अन्य जीवों से मनुष्य महान कैसे है ?

(4) धरती-सा धीर किसे कहा गया है ?

(5) धरती की शान कविता के रचयिता कौन हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सविस्तार लिखिए :

(1) कविता में कवि ने किन प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण किया है ? कैसे ?

(2) प्रस्तुत कविता में मनुष्य के प्रति किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है, और उससे हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?

(3) धरती की शान से कवि का क्या तात्पर्य है ? भाव स्पष्ट कीजिए ।

(4) मनुष्य के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है काव्य के आधार पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

(5) धरती की शान कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) गुरु-सा मतिमान,
पवन-सा तू गतिमान,
तेरी नभ से भी
ऊँची उड़ान है रे ।

(2) धरती की शान,
तू भारत की संतान
तेरी मुट्ठियों में
बंद तूफान है रे

4. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

भूचाल, हिमगिरि, वाणी, तूफान, अमृत, धीर, हिम्मत, नभ, निज

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

अमृत, अम्बर, अमर, धीर, वीर, पाप, जीवन

6. सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(1) तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को....

(अ) मोड़ दे (ब) फोड़ दे

(क) तोड़ दे (ड) जोड़ दे

(2) पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि-सा ....

(अ) हाल (ब) भाल

(क) काल (ड) मिसाल

(3) .... को तू जान, जरा शक्ति पहचान

(अ) निज (ब) स्वयं

(क) खुद (ड) स्व

(4) तू जो अगर हिम्मत से .... ले

(अ) ठान (ब) जान

(क) काम (ड) पहचान

7. काव्य-पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(1) धरती .... महान है ।

(2) तू जो .... उड़ान है रे।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत गीत कंठस्थ कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- धरती की शान गीत का सस्वर गान करवाइए ।

•

21 क्रान्तिकारी शेखर का बचपन

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन

(जन्म : सन् 1911 ई. : निधन : सन् 1987 ई.)

आधुनिक हिन्दी काव्यधारा में नई कविता के प्रमुख कवि एवं बहुचर्चित उपन्यासकार के रूप में 'अज्ञेयजी' का नाम एवं प्रदान उल्लेखनीय है। उनका जन्म 9 मार्च, 1911 में कसया (कुशीनगर) में हुआ। बचपन का 1911-1915 का समय लखनऊ में बीता। बाद में कुछ समय के लिए वे श्रीनगर और जमू में रहे। उन्होंने लाहौर के एक कालेज से बी.एससी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। क्रान्तिकारी दल में सक्रिय भाग लेने के कारण उन्हें कारागार में रहना पड़ा। उन्होंने 'सैनिक' और 'विशाल भारत' का संपादन भी किया। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय साहित्य और संस्कृति के अध्यापक के रूप में काम किया। अज्ञेयजी विद्रोही व्यक्ति रहे है। विद्रोह उनके साहित्य की मूल चेतना है। उनका उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' प्रेमचंद के गोदान के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'नदी के द्वीप' और 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास भी लिखे हैं। वे हिन्दी कविता में प्रयोगवादी आंदोलन के प्रवर्तक माने जाते हैं। इन्हें 'आँगन के पार द्वार' काव्यकृति पर साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया। 'कितनी नावों में कितनी बार' पुस्तक पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया। 'भग्नदूत', 'चिन्ता', 'इत्यलम्', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'अरी ओ करुणा प्रभामय' उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं। उन्होंने 'तार सप्तकं' का भी संपादन किया था।

'क्रान्तिकारी शेखर का बचपन' उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' भाग-1 का अंश है। यह उपन्यास 1940 ई. में लिखा गया था। बचपन से लेकर कॉलेज जीवन तक का जीवनविचित्र है। शेखर का जीवन दर्शन स्वातंत्र्य की खोज लक्षित हैं। वह लील पर चलनेवाला नहीं हैं।

शेखर का बचपन क्रान्तिकारी विचारों से अभिभूत था। वह ब्रिटीश शासन का जबरदस्त विरोधी और स्वदेशी चीजों का चाहक। अंग्रेजी के बजाय हिन्दी का हिमायती बचपन के उसके जीवन का कुछ अंश इस उपन्यास अंश में संकलित हैं।

असहयोग की एक लहर आयी और देश उसमें बह गया। शेखर भी उसमें बहने की चेष्टा करने लगा और जब नहीं बह पाया, तब हाथों से खेकर अपने को बहाने लगा-

उसने विदेशी कपड़े उतारकर रख दिये, जो दो-चार मोटे देशी कपड़े उसके पास थे, वही पहनने लगा। बाहर घूमने-मिलने जाना उसने छोड़ दिया, क्योंकि इतने देशी कपड़े उसके पास नहीं कि बाहर जा सके। प्राय: दुपहर को वह ऊपर की एक खिड़की के पास जाकर खड़ा हो जाता और बाहर देखा करता। कभी दूर से जब बहुत-से कण्ठों की समवेत पुकार उस तक पहुँचती:

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

तब उसके प्राण पुलकित हो उठते और वह भी अपनी खिड़की से पुकार उठता-

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

इससे आगे वह जा नहीं सकता था- घर से अनुमति नहीं थी लेकिन अनुमति का न होना ही तो एक अंकुश था, जो निरंतर उसे कोई मार्ग ढूँढ़ने के लिए प्रेरित किया करता था...

माँ के अतिरिक्त सब लोग बाहर गये हुए थे। माँ ऊपर कोठे पर बैठी हुई थी। शेखर ने घर के सब कमरों में से विदेशी कपड़े बटोरे और नीचे एक खुली जगह ढेर लगा दिया। फिर लैम्पे लाकर उन पर मिट्टी का तेल उँडेला (तेल का पीपा नौकरों के पास रहता था, वहाँ जाने की हिम्मत नहीं हुई), और आग लगा दी।

आग एकदम भभक उठी। शेखर का आह्लाद भी भभक उठा। वह आग के चारों ओर नाचने लगा और गला खोलकर गाने लगा:

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

थोड़ी ही देर में माँ आयी और थोड़ी देर में शेखर के गाल भी मानों विदेशी हो गए- जलने लगे...

लेकिन ढेर राख हो गया था।

शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा हो गई। उसने देखा कि हमारी नस-नस में विदेशी का प्रभुत्व ही नहीं, आतंक भरा हुआ है। उसे पुरानी बातें भी याद आयी और नयी भी। वह देखने लगा। उसे यह भी ध्यान हुआ कि पिता उसे घर में भाइयों से अंग्रेजी में बात करने को कहा करते हैं, यह भी कि वह शैशव से अंग्रेजी बोलना जानता है, पर हिन्दी अभी सीख रहा है। उसकी पहली आया ईसाई थी और अंग्रेजी ही बोलती थी, उसका पहला गुरु, जिसके साथ उसे दिन-भर बिताना होता था, एक अमरिकन मिशनरी था, जो पढ़ाता चाहे कुछ नहीं

था, दिन-भर अंग्रेजी की शिक्षा तो देता था। शेखर ने देखा कि यदि मातृभाषा वह है, जो हम सबसे पहले सीखते हैं, तब तो अंग्रेजी ही उसकी मातृभाषा है और विदेशी ही उसकी माँ... उसके आत्माभिमान को बहुत सख्त धक्का लगा... जिसे मैं घृणित समझता हूँ, उसी विदेशी को माँ कहने को बाध्य होऊँ। उसने उसी दिन से बड़ी लगन से हिन्दी पढ़ना आरंभ किया और चेष्टा से अपनी बातचीत में से अंग्रेजी शब्द निकालने लगा, अपनी आदतों में से विदेशी अभ्यासों को दूर करने लगा...

और अपने हिन्दी-ज्ञान को प्रमाणित करने के लिए, और गांधी के प्रति अपनी श्रद्धा- जिसे व्यक्त करने का और कोई साधन उसे प्राप्त नहीं था-प्रकट करने के लिए उसने एक राष्ट्रीय नाटक लिखना आरंभ किया। जीवन में देखे हुए एकमात्र खेल की स्मृति अभी ताजी थी, इसलिए उसे लिखने में विशेष कठिनाई नहीं हुई। प्रस्तावना तो ज्यों-की-त्यों हथिया ली, केवल कहीं-कहीं कुछ मामूली परिवर्तन करना पड़ा। उसके बाद नाटक आरंभ हुआ- एक स्वाधीन लोकतंत्र भारत का विराट स्वप्न, जिसके राष्ट्रपिता गांधी हैं; और सिद्धि के लिए साधन है अनवरत कताई और बुनाई, विदेशी माल और मनुष्य का परित्याग और प्रत्येक अवसर पर दूसरा गाल आगे कर देना। 'सत्य हरिश्चन्द्र' का इन्द्रलोक आरंभ से हटकर अंत में आ गया था- अपने ऊपर शेखर की प्रतिभा द्वारा सूर्यास्त के सुनहरे टापू की छाप लेकर। शेखर के नाटक का अन्तिम दृश्य था स्वाधीन और बाधाहीन भारत-एक स्थूल आकार-प्राप्त स्वप्न...

नाटक पूरा हो गया। शेखर ने सुन्दर देशी स्याही से उसकी प्रतिलिपि तैयार की और उसे अपनी पुस्तकों के नीचे छिपाकर रख दिया। पहले साहित्यिक प्रयत्नों की गति उसे अभी याद थी, इसलिए उसने अपना यह नाटक, यह अमूल्य रत्न किसी को नहीं दिखाया-सरस्वती को भी नहीं! और हर समय, जब जहाँ वह जाता, उसके मन में एक ध्वनि गूंजा करती, मैं शेखर हूँ, एक अपूर्व नाटक का लेखक चन्द्रशेखर! और मैंने अकेले ही, बिना किसी की सहायता के अपने हाथों से उसका निर्माण किया है, स्वाधीन बाधाहीन भारत के उस चित्र का, मैंने!

शेखर के पिता एक दिन के दौरे पर जा रहे थे और शेखर साथ था। बाँकीपुर स्टेशन पर सामान रखकर, पिता और पुत्र वेटिंग-रूम के बाहर टहल रहे थे-शेखर कुछ आगे, पिता पीछे-पीछे।

पास से एक लड़का आया और शेखर की ओर उन्मुख होकर अंग्रेजी में बोला, 'तुम्हारा नाम क्या है?'

शेखर ने सिर से पैर तक उसे देखा। लड़का एक अच्छा-सा सूट पहने था, सिर पर अंग्रेजी टोपी और उसके स्वर में अहंकार था, शायद वह अपने अंग्रेजी-ज्ञान का परिचय देना चाहता था।

शेखर को प्रश्न बुरा और अपमानजनक लगा। उसने उत्तर नहीं दिया। कुछ इसलिए भी नहीं दिया कि पीछे पिता थे और पिता की उपस्थिति में बात करते वह झिझकता था।

उस लड़के ने समझा, उसका सामना करनेवाला कोई नहीं है- यह लड़का शायद अंग्रेजी जानता ही नहीं। उसने तनिक और रोब में कहा, "My name is- Do you go to school?" (मेरा नाम है- तुम स्कूल में पढ़ते हो?')

शेखर के पिता वहाँ न होते तो वह प्रश्न का उत्तर चाहे न देता पर (हिन्दी में) कुछ उत्तर अवश्य देता। उसके मन में यह सन्देह उठ भी रहा था कि वह लड़का शायद कोई पाठ ही दुहरा रहा है, अंग्रेजी उतनी जानता नहीं। पर उसने घृणा से उस लड़के की ओर देखा, उत्तर कोई नहीं दिया।

पिता के क्रुद्ध स्वर ने कहा-शायद उस लड़के को जताने के लिए कि मेरा लड़का अंग्रेजी जानता है- 'जवाब क्यों नहीं देते!'

शेखर और भी चिढ़ गया और भी चुप हो गया। वह लड़का मुस्कराकर आगे बढ़ गया। पिता ने कहा, 'इधर आओ।' शेखर उनके पीछे-पीछे वेटिंग-रूम में गया तो पिता ने उसका कान पकड़कर पूछा, ''जवाब क्यों नहीं दिया? मुँह टूट गया है?''

तभी ट्रेन आ गयी और शेखर कुछ उत्तर देने से-या उत्तर न देने की गुस्ताखी करने से बच गया।

दूसरे दिन, घर पर पिता ने माँ से कहा, 'हमारे लड़के सब बुद्धू है। किसी के सामने तो बोल नहीं निकलता।'

शेखर ने सुन लिया।

('शेखर : एक जीवनी उपन्यास : पहला भाग')

शब्दार्थ और टिप्पणी

शैशव बचपन **बोलबाला** अति प्रसिद्ध **अनुमति** सहमति **अंकुश** नियंत्रण **परित्याग** बहिष्कार

मुहावरे

मुँह काला होना बेइज्जती होना **घृणा** नफरत **बाध्य** विवश

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**
   (1) शेखर ने बाहर घूमने-मिलने जाना क्यों छोड़ दिया?
   (2) शेखर के मस्तिष्क में कैसी पुकार पहुँचती थी?
   (3) शेखरने आग कैसे जलाई?
   (4) शेखर गला खोलकर क्या गाने लगा?
   (5) अंग्रेजी बालक ने जवाब में क्या कहा?
2. **दो-तीन वाक्य में उत्तर दीजिए :**
   (1) घर के सदस्य बाहर गए तब शेखर ने क्या किया?
   (2) शेखर के नाटक का विषय क्या था?
   (3) अंग्रेजी बालक के प्रश्न का उत्तर शेखर ने क्यों नहीं दिया?
   (4) पिता ने क्रुद्ध स्वर में शेखर को क्या कहा?
   (5) शेखर उत्तर न देने में कैसे बच गया?
   (6) घर आकर पिता ने माँ से क्या कहा? क्यों?
3. **सविस्तार उत्तर लिखिए :**
   (1) शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा क्यों हो गई थी?
   (2) शेखर के घर में अंग्रेजी भाषा के प्रति गहरा प्रभाव था-ऐसा हम कैसे कह सकते हैं?
   (3) शेखर का चरित्र-चित्रण कीजिए।
   (4) शेखर ने नाटक लिखना कब आरंभ किया? क्यों?
4. **विलोम शब्द लिखिए :**
   सहयोग, विदेशी, बाहर, दुश्मन, अंकुश
5. **समानार्थी शब्द लिखिए :**
   अनुमति, कष्ट, निरंतर, आज़ाद
6. **मुहावरें का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए:**
   (1) मुँह काला होना

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अन्य क्रांतिकारियों में से किन्हीं दो क्रांतिकारियों की जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- हिन्दी दिवस अंतर्गत विविध प्रवृत्तियों का आयोजन कीजिए और राष्ट्रभाषा का महत्त्व बढ़ाइए।

●

स्वर संधि

परिभाषा :

- ‘‘दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को ‘संधि’ कहते हैं।’’ संधि का शाब्दिक अर्थ है-मेल या समझौता। जब दो वर्णों का मिलन अत्यन्त निकटता के कारण होता है तब उनमें कोई-न-कोई परिवर्तन होता है और वही परिवर्तन संधि के नाम से जाना जाता है।

जैसे : हिम + आलय

↓ ↓

अ + आ (यहाँ ‘अ’, एवं ‘आ’ अत्यन्त निकट हैं)

आ (‘अ’ एवं ‘आ’ के मिलने से विकार हुआ)

- हिम् (म् से ‘अ’ निकाल ने पर)
- ‘आलय’ से ‘आ’ निकाल ने पर ‘लय’ बचा
- हिम् + (अ + आ) + लय

आ

- हिम् आ लय (‘म्’ के साथ ‘आ’ का संयोग होने पर ‘हिमा’ बना)
- अब ‘हिमा’ और ‘लय’ दोनों को मिला देने पर ‘हिमालय’ बना।
- अत: हिम + आलय = हिमालय

संधि के भेद :

- संधि के तीन भेद हैं-

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि और 3. विसर्ग संधि

यहाँ हम ‘स्वर संधि के बारे में अभ्यास करेंगे।

स्वर संधि :

- ‘‘स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे ‘स्वर संधि’ कहते हैं।’’

जैसे : - अभि + इष्ट = अभीष्ट

- इ + इ = ई (यहाँ ‘इ’ और ‘इ’ दो स्वरों के बीच संधि होकर ‘ई’ रूप हुआ)

- स्वर संधि के पाँच प्रकार हैं-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण स्वर संधि
5. ययादी स्वर संधि

प्रथम तीन प्रकारों के बारे में समझेंगे।

(1) **दीर्घ स्वर संधि :**

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

अ + अ = आ	अन्न (अ) + अभाव (अ) = अन्नाभाव (आ)
	अन्य (अ) + अन्य (अ) = अन्यान्य (आ)
अ + आ = आ	परम (अ) + आत्मा (आ) = परमात्मा (आ)
	असुर (अ) + आलय (आ) = असुरालय (आ)

आ + अ = आ आशा (आ) + अतीत (अ) = आशातीत (आ)
जिह्वा (आ) + अग्र (अ) = जिह्वाग्र (आ)

आ + आ = आ कृपा (आ) + आचार्य (आ) = कृपाचार्य (आ)
दया (आ) + आनंद (आ) = दयानंद (आ)

इ + इ = ई कवि (इ) + इन्द्र (इ) = कवीन्द्र (ई)
अति (इ) + इव (इ) = अतीव (ई)

इ + ई = ई कपि (इ) + ईश (ई) = कपीश (ई)
कवि (इ) + ईश (ई) = कवीश (ई)

ई + इ = ई फणी (ई) + इन्द्र (इ) = फणीन्द्र (ई)
मही (ई) + इन्द्र (इ) = महीन्द्र (ई)

ई + ई = ई पृथ्वी (ई) + ईश (ई) = पृथ्वीश (ई)
जानकी (ई) + ईश (ई) = जानकीश (ई)

उ + उ = ऊ गुरु (उ) + उपदेश (उ) = गुरुपदेश (ऊ)

उ + ऊ = ऊ लघु (उ) + ऊर्मि (ऊ) = लघूर्मि (ऊ)

ऊ + उ = ऊ वधू (ऊ) + उत्सव (उ) = वधूत्सव (ऊ)

ऊ + ऊ = ऊ भू (ऊ) + ऊर्ध्व (ऊ) = भूर्ध्व (ऊ)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) संधि कीजिए।

- कंस + अरि = कंसारि
- एक + आनन = ...
- गिरि + इन्द्र = ...
- पारि + ईक्षा = ...
- नाडी + ईश्वर = ...

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- कल्पान्त = कल्प + अन्त
- भाषान्तर = ...
- विद्यालय = ...
- मुनीश = ...
- कृष्णानंद = ...
- रवीन्द्र = ...
- रजनीश = ...

(3) गुण स्वर संधि :

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

- **अ / आ + इ / ई = ए**

  जैसे : - देव (अ) + इन्द्र (इ) = देवेन्द्र (ए)

  - उदाहरण में 'व' से 'ए' का संयोग होने पर देवेन्द्र और दोनों खंड़ों को मिलाने पर 'देवेन्द्र' बना।
  - **अन्य उदाहरण :**

    सुर (अ) + इन्द्र (इ) = सुरेन्द्र
    ईश्वर (अ) + इच्छा (इ) = ईश्वरेच्छा
    जित (अ) + इन्द्रिय (इ) = जितेन्द्रिय
    उप (अ) + ईक्षा (ई) = उपेक्षा
    तप (अ) + ईश्वर (ई) = तपेश्वर

लोक (अ) + ईश (ई) = लोकेश
उमा (आ) + ईश (ई) = उर्मिलेश
लंका (आ) + ईश्वर (ई) = लंकेश्वर
महा (आ) + इन्द्र (इ) = महेन्द्र
यथा (आ) + इष्ट (इ) = यथेष्ट

- **अ / आ + उ / ऊ = ओ**

जैसे : – वीर (अ) + उचित (उ) = वीरोचित (ओ)

- उदाहरण में 'र्' से 'ओ' का संयोग होने पर वीर् ओ चित सभी खंड़ों को मिलाने पर 'वीरोचित' बना।
- **अन्य उदाहरण :**

आत्म (अ) + उत्सर्ग (उ) = आत्मोत्सर्ग (ओ)
लोक (अ) + उक्ति (उ) = लोकोक्ति (ओ)
अक्ष (अ) + ऊहिणी (ऊ) = अक्षौहिणी (ओ)
गंगा (आ) + उदक (उ) = गंगोदक (ओ)
विद्या (आ) + उपार्जन (उ) = विद्योपार्जन (ओ)
गंगा (आ) + ऊर्मि (ऊ) = गंगोर्मि (ओ)

- **अ / आ + ऋ = अर्**

जैसे : – महा (आ) + ऋषि (ऋ) = महर्षि (अर्)

- 'मह्' के 'ह' से 'अ' का संयोग होने से – महषि 'र्' का रेफ हो जाने पर 'र्षि'
- 'मह' और 'र्षि' को मिलाने पर 'महर्षि' बना।
- **ध्यातव्य :** जब दो सस्वर व्यंजनों के बीच 'र्' रहे तो वह अगले व्यंजन पर रेफ बन जाता है। उपर्युक्त उदाहरण में 'ह' और 'षि' के बीच 'र्' है जो 'षि' पर रेफ बन चुका है।
- **अन्य उदाहरण :**

देव (अ) + ऋषि (ऋ) = देवर्षि (अर्)
ब्रह्म (अ) + ऋषि (ऋ) = ब्रह्मर्षि (अर्)
राजा (आ) + ऋषि (ऋ) = राजर्षि (अर्)
उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(1) संधि कीजिए।

- भुजग + इन्द्र = भुजगेन्द्र
- नर + इन्द्र = ...
- फल + इच्छा = ...
- कमल + ईश = ...
- प्राण + ईश्वर = ...
- उमा + ईश = ...
- महा + ईश = ...
- रमा + इन्द्र = ...
- सप्त + ऋषि = ...
- अर्थ + उपार्जन = अर्थोपार्जन
- ग्राम + उद्धार = ...
- नव + उदय = ...
- पर + उपकार = ...
- नव + ऊढा = ...
- लंबा + उदर = ...
- महा + उदय = ...
- धारा + उष्ण = ...
- महा + ऋषि = ...
- सम् + कृति = ...

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- कर्णोद्धार = कर्ण + उद्धार
- जनमोत्सव = ...
- नीलोत्पल = ...
- धीरोदात्त = ...
- चिन्तोन्मुक्त = ...
- महोपदेश = ...
- ध्वजोत्तोलन = ...
- विवेकानंद = ...
- देवेन्द्र = देव + इन्द्र
- विजयेच्छा = ...
- गणेश = ...
- भूतेश = ...
- परमेश्वर = ...
- गंगेश = ...
- थानेश्वर = ...
- विद्योत्तमा = ...
- संगीत = ...

(3) वृद्धिस्वर संधि :

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

- **अ / आ + ए / ऐ = ऐ**

  जैसे : - एक (अ) + एक (ए) = एकैक

  - 'एक्' के 'क्' से 'ऐ' का संयोग होने से - ए कै क = एकैक
  - **अन्य उदाहरण :**

    सदा (आ) + एव (ए) = सदैव (ऐ)

    तथा (आ) + एव (ए) = तथैव (ऐ)

    टिक (अ) + ऐत (ऐ) = टिकैत (ऐ)

    गंगा (आ) + ऐश्वर्य (ऐ) = गंगैश्वर्य (ऐ)

- **अ / आ + ओ / औ = औ**

  जैसे : - जल (अ) + ओघ (ओ) = जलौघ

  - 'जल्' के 'ल्' से 'औ' का संयोग होने से - जल् औ घ = जलौघ बना
  - **अन्य उदाहरण :**

    परम (अ) + ओषधि (ओ) = परमौषधि (औ)

    बिम्ब (अ) + ओष्ठ (ओ) = बिम्बौष्ठ (औ)

    गृह (अ) + औत्सुक्य (औ) = गृहौत्सुक्य (औ)

    गंगा (आ) + ओघ (ओ) = गंगौघ (औ)

    महा (आ) + औषध (औ) = महौषध (औ)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. संधि कीजिए ।

   वन + औषधि = ...

   परम + औदार्य = ...

2. संधि विच्छेद कीजिए ।

   शुद्धोदन = ...

   महौषध = ...

(4) यण् स्वर संधि :

- यदि इ/ई, उ/ऊ और ऋ के बाद भिन्न स्वर आए तो इ/ई का 'य', उ/ऊ का 'व' और ऋ का 'र' हो जाता है। इसके संदर्भ में निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।
- **इ / ई + भिन्न स्वर :**

जैसे : - इ / ई

↓

य् (यह भिन्न स्वर से मिल जाता है)

जैसे : प्रति + एक = प्रत्येक

↓ ↓

इ ए ('इ' से भिन्न स्वर है)

↓ ↓

य् ये (भिन्न स्वर से मिलने पर)

- अगला रूप, प्रत् ये क
- सभी खंड़ों को मिलाने पर प्रत्येक बना।

अन्य उदाहरण:

आदि (इ) + अन्त (अ) = आद्यन्त (य)

प्रति (इ) + अक्ष (अ) = प्रत्यक्ष (य)

वि (इ) + अर्थ (अ) = व्यर्थ (य)

अति (इ) + आचार (आ) = अत्याचार (या)

वि (इ) + आकुल (आ) = व्याकुल (या)

अति (इ) + उत्तम (उ) = अत्युत्तम (यु)

वि (इ) + उत्पत्ति (उ) = व्युत्पत्ति (यु)

दधि (इ) + ओदन (ओ) = दध्योदन (यो)

देवी (ई) + आगम (आ) = देव्यागम (दा)

नि (इ) + ऊन (ऊ) = न्यून (यू)

उ/ऊ + भिन्न स्वर के उदाहरण:

अनु (उ) + एषण (ए) = अन्वेषण (वे)

अनु (उ) + ईक्षण (ई) = अन्वीक्षण (वी)

अनु (उ) + अय (अ) = अन्वय (व)

पशु (उ) + आदि (आ) = पश्वादि (वा)

लघु (उ) + आहार (आ) = लघ्वाहार (वा)

ऊह (ऊ) + अपोह (अ) = ऊहापोह (आ)

वधू (ऊ) + ऐश्वर्य (ऐ) = वध्वैश्र्य (वै)

वध (ऊ) + आगमन (आ) = वध्वागमन (वा)

ऋ + भिन्न स्वर के उदाहरण:

पितृ (ऋ) + आदेश (आ) = पित्रादेश (रा)

मातृ (ऋ) + आनन्द (आ) = मात्रानन्द (रा)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

संधि कीजिए।

- अति + अन्त = ...
- इति + आदि = ...
- वि + आधि = ...
- अभि + उदय = ...
- गौरी + आदेश = ...
- पशु + अधम = ...
- मधु + आचार्य = ...
- वधू + आगमन = ...

संधि विच्छेद कीजिए।

- अत्यधिक = ...
- यद्यपि = ...
- गत्यात्मकता = ...
- सख्यागमन = ...
- व्याधात = ...
- उपर्युक्त = ...
- व्यूह = ...
- सरयागमन = ...
- स्वल्प = ...
- मध्वासव = ...

(5) अयादि स्वर संधि :

- यदि ए, ऐ, ओ और औ के बाद भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय् 'ऐ' का आय् 'ओ' का अव् और 'औ' का आव् हो जाता है । इसके संदर्भ में यह याद रखिए कि अय्, आय् और आव् के य् और व् आगेवाले भिन्न स्वर से मिल जाते हैं।

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए

- **उदाहरण :**

जैसे : नै + अक

↓ ↓

ऐ अ (भिन्न स्वर)

↓ ↓

आय् य (न् + आ = ना) शब्द बनेगा = नायक

- **अन्य उदाहरण :**

चे (ए) + अन (अ) = चयन (अय)

नै (ऐ) + अक (अ) = नायक (आय)

पो (ओ) + अन (अ) = पवन (अव)

गै (ऐ) + इका (इ) = गायिका (आयि)

पो (ओ) + इत्र (इ) = पवित्र (अयि)

भौ (औ) + उक (उक) = भावुक (आवु)

धौ (औ) + अक (अ) = धावक (आव)

पौ (औ) + अक (अ) = पावक (आव)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1) संधि कीजिए।

- ने + अन = ...
- गै + अन = ...
- श्रो + अन = ...
- शै + अन = ...

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- नायिका = ...
- शावक = ...
- श्रावण = ...

●

22 वीरों का कैसा हो वसन्त

सुभद्राकुमारी चौहान

(जन्म : सन् 1904 ई. : निधन : सन् 1948 ई.)

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म प्रयाग में ठाकुर रामनाथ के घर हुआ था। कास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में आपने शिक्षा प्राप्त की। आपका विवाह खण्डवा निवासी ला. लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ संपन्न हुआ। सुभद्राकुमारी चौहान ने कांग्रेस के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए अपना अध्ययन छोड़ दिया और पति को भी देश-सेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। सन् 1947 ई. की 15 फरवरी को जबलपुर के समीप एक मोटर दुर्घटना में उनका देहान्त हो गया। सुभद्राकुमारी चौहान न केवल स्वतंत्रता सेनानी रही वरन् उन्होंने साहित्य-सृजन भी विपुल मात्रा में की। 'मुकुल' व 'त्रिधारा' इनके काव्य-संग्रह हैं। बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-साधे चित्र, कहानी-संग्रह हैं। बिखरे मोती नामक पुस्तक पर उन्हें सकसेरिया पुरस्कार प्रदान किया गया था। सुभद्राकुमारी चौहान की भाषा-शैली सरल और सुबोध हैं।

प्रस्तुत कविता वीरों की शूरवीरता को प्रोत्साहित करती हुई उत्तम काव्यरचना है। पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चारों दिशाऐ पुकार रही है। पर्वत-हल्दी-घाटी सिंह-गढ़ भी तैनात हो गए हैं तो वीरों का कैसा हो वसन्त कहकर कवयित्रीने शूरवीरों का उत्साह बढ़ाया है।

वीरों का कैसा हो वसन्त?
आ रही हिमाचल से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुंचा अनंग,
बधु-वसुधा पुलकित अंग-अंग,
हैं वीर वेष में किन्तु कन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
भर रही कोकिला इधर तान,
मारु बाजे पर उधर गान,
है रंग और रण का विधान,
मिलने आए हैं आदि-अन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
कह दे अतीत अब मौन त्याग?
लंके! तुझ में क्यों लगी आग,
ए कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग,
बतला अपने अनुभव अनन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
हल्दी-घाटी के शिला-खण्ड,
ए दुर्ग सिंह-गढ़ के प्रचण्ड,
राणा-ताना का कर घमण्ड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,
वीरों का कैसा हो वसन्त?
भूषण अथवा कवि चन्द नहीं;
बिजली भर दे वह छन्द नहीं,
है कलम बँधी स्वच्छन्द नहीं,
फिर हमें बतावें कौन? हन्त!
वीरों का कैसा हो वसन्त?

शब्दार्थ और टिप्पणी

उदधि समुद्र **प्राची** पूर्व दिशा **नभ** आकाश **दिग् दिगन्त**, अनन्त **मधु** भँवरा **वसुधा** पृथ्वी **कन्त** स्वामी **मारु** एस वाद्य यंत्र **अतीत** भूतकाल **घमण्ड** अभिमान

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) बार-बार कौन गरजता है ?

(2) प्रकृति के तत्त्व क्या पूछ रहे हैं ?

(3) बधु-वसुधा में क्या परिवर्तन आया ?

(4) कवयित्री कुरुक्षेत्र से क्या कहते हैं ?

(5) कवयित्री की कलम की क्या विशेषता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) वीरों का कैसा है वसन्त ? ऐसा कौन-कौन पूछ रहे है ?

(2) 'कह दे अतीत अब मौन त्याग' ऐसा कवयित्रीने क्यों कहा है ?

(3) किन ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर कवयित्रीने 'वीरों का वसन्त' बताया है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) ''वीरों का कैसा है वसन्त-'' इस पंक्ति को अपने शब्दों में कविता के आधार पर समझाइए।

(2) हल्दी-घाटी और सिंह-गढ़ से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(3) ''है कलम बँघी स्वच्छन्द नहीं''- ससंदर्भ समजाइए।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- शहीदों की सूची एवं उनके कार्यों का संकलन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शहीदों पर लिखी हुई कविताओं का संकलन करवाइए।
- शहीदों के स्मारकों की मुलाकात करवाइए।
- देशभक्ति के गीतों का संकलन करें।

●

23 जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी

धर्मवीर भारती

(जन्म : सन् 1926 ई. : निधन : सन् 1997 ई.)

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर, 1926 ई. को इलाहाबाद में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्हों ने एम.ए., पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वहाँ हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1960 से 1988 तक 'धर्मयुग' जैसे प्रतिष्ठित साप्ताहिक का सम्पादन कार्य किया। उन्होंने देश-विदेश की यात्राएँ भी की थी। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सन्मानित किया था और साहित्य सेवा के लिए 'व्यास सम्मान' से अलंकृत किया गया था।

धर्मवीर भारती नयी कविता के श्रेष्ठ कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार थे। 'अंधायुग', 'कनुप्रिया', 'सातगीत वर्ष', 'ठंडा लोहा' उनके काव्य-संग्रह है। काव्य-नाटक अंधायुग उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना हैं। 'गुनाहों के देवता', 'सूरज का साँतवाँ घोड़ा' तथा 'ग्यारह स्वप्नों का देश' उनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'गुल की बन्नो', 'बन्द गली का आखिरी मकान' आदि कहानियों का हिन्दी की नयी कहानी में विशिष्ट स्थान हैं। 'ठेले पर हिमालय' और 'पश्यंती' उनके निबंध-संग्रह हैं।

प्रस्तुत संस्मरण द्वारा धर्मवीर भारतीजी ने अपने बचपन के दिनों की बातों को हमारे सामने रखा है। उनका बचपन गरीबी में बीता था। लेकिन उनको पढ़ने का बड़ा शौक था। स्कूल में से इनाम में दो किताबें मिली तो पिताजी ने अपनी अलमारी में जगह देकर लेखक की अपनी लाइब्रेरी बना दी। वहाँ से लेखक को किताबें इकट्ठी करने की धुन सवार हो गई। माँ ने पिक्चर देखने के लिए दो रुपये दिये थे लेकिन, लेखक का मन पलट जाता हैं और वे पुस्तक की दुकान में से दस आने की 'देवदास' नाम की पुस्तक खरीदतें हैं। लेखक ने अपने पैसों से खरीदी हुई वह पहली किताब थी। इस पाठ में लेखक ने जीवन में पुस्तकों के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।

बचपन की बात है। उस समय आर्यसमाज का सुधारवादी आन्दोलन पूरे जोर पर था। मेरे पिता आर्यसमाज रानीमंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

पिता की अच्छी-खासी सरकारी नौकरी थी, बर्मा रोड जब बन रही थी तब बहुत कमाया था उन्होंने। लेकिन मेरे जन्म के पहले ही गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। हम लोग बड़े आर्थिक कष्टों से गुजर रहे थे फिर भी घर में नियमित पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं- 'आर्यमित्र', 'साप्ताहिक', 'वेदोदय', 'सरस्वती', 'गृहणी' और दो बाल पत्रिकाएँ खास मेरे लिए 'बालसखा' और 'चमचम'। उनमें होती थी परियों, राजकुमारों, दानवों और सुन्दर राजकन्याओं की कहानियाँ और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाह लग गयी। हर समय पढ़ता रहता। खाना खाते समय थाली के पास पत्रिकाएँ रखकर पढ़ता। अपनी दोनों पत्रिकाओं के अलावा भी 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' पढ़ने की कोशिश करता। घर में पुस्तकें भी थीं। उपनिषदें और उनके हिन्दी अनुवाद - सत्यार्थ प्रकाश। 'सत्यार्थ प्रकाश' के खंडन-मंडन वाले अध्याय पूरी तरह समझ में नहीं आता था पर पढ़ने में मजा आता था।

मेरी प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानन्द की एक जीवनी, रोचक शैली में लिखी हुई, अनेक चित्रों से सुसज्जित। वे तत्कालीन पाखंडों के विरुद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्भुत व्यक्तित्व थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थी। चूहे को भगवान का मीठा खाते देख कर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, घर छोड़कर भाग जाना। तमाम तीर्थों, जंगलों, गुफाओं, हिमशिखरों पर साधुओं के बीच घूमना और हर जगह इसकी तलाश करना कि भगवान क्या है? सत्य क्या है? जो भी समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी मूल्य हैं, रूढ़ियाँ हैं उनका खंडन करना और अन्त में अपने हत्यारे को क्षमा कर उसे सहारा देना। यह सब मेरे बालमन को बहुत रोमांचित करता।

माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती। चिन्तित रहती कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। पास कैसे होगा? कहीं खुद साधु बनकर फिर से भाग गया तो? पिता कहते जीवन में यही पढ़ाई काम आयेगी पढ़ने दो। मैं स्कूल नहीं भेजा गया था, शुरू की पढ़ाई के लिए घर पर मास्टर रक्खे गये थे। पिता नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में मैं गलत संगति में पड़ कर गाली-गलौज सीखूँ, बुरे संस्कार ग्रहण करूँ। अत: स्कूल में मेरा नाम लिखाया गया, जब मैं कक्षा दो तक की पढ़ाई घर पर कर चुका था। तीसरे दर्जे में भर्ती हुआ। उस दिन शाम को पिता उँगली पकड़ कर मुझे घुमाने ले गये। लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रख कर बोले - 'वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की

चिन्ता मिटाओगे। 'उनका आशीर्वाद था या मेरा जी तोड़ परिश्रम कि तीसरे चौथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।' माँ ने आँसू भर कर गले लगा लिया, पिता मुस्कुराते रहे, कुछ बोले नहीं।

अंग्रेजी में मेरे नम्बर सबसे ज्यादा थे, अतः स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। एक में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती हो। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी की कथाएँ थीं, कितने प्रकार के होते हैं। कौन-कौन सा माल लाद कर लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की ज़िन्दगी, कैसी होती है, कैसे-कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ व्हेल होती है, कहाँ शार्क होती है।

इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से मेरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने अलमारी के एक खाने में अपनी चीजें हटाकर जगह बनायी और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रख कर कहा, 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है।' यहाँ से आरम्भ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। आप पूछ सकते हैं कि किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक, किताबें इकट्ठी करने की सनक क्यों सवार हुई, उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है।

इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केन्द्रों में एक रहा है। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक। अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी हरि भवन। स्कूल से छुट्टी मिली कि मैं उसमें जाकर अध्ययन करता ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आह्वान बुलावा **अदम्य** जो दबाया न जा सके, प्रबल **रोमांचित** पुलकित, जिसके रोयें खडे हों **टोल्सटाय** रुसी कथाकार **विक्टर ह्यूगो** फ्रांसिसी कथाकार **मैक्सिम गोर्की** एक रुसी कथाकार **ईश्यू कराना** निर्गत कराना **कोशिश** प्रयत्न **रोचक** रुचि अनुसार **जीवनी** जीवनचरित्र **खंडन** विभाजन **संगति** संगत, मेल **कुल्हड़** मिट्टी का बरतन **अक्सर** खास करके **सहमति** अनुमोदन

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) माँ की स्कूली पढ़ाई पर जोर देने से लेखक की पढ़ाई पर क्या असर हुआ?

(2) लेखक की प्रिय पुस्तक कौन-सी थी? वे किन बातों से सम्बन्धित थी?

(3) माँ के दिये हुए रुपयों का लेखक ने क्या किया? क्यों?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) बचपन में लेखक के घर में कौन-कौन सी पत्रिकाएँ आती थी?

(2) बचपन में लेखक को स्वामी दयानन्दजी की जीवनी क्यों पसंद थी?

(3) लेखक को अंग्रेजी में सबसे अधिक अंक पाने के बाद उपहार में कौन सी दो पुस्तकें मिली थी और उनसे लेखक को क्या जानकारी प्राप्त हुई?

(4) लेखक की माँ ने लेखक को कितने रुपये दिये? क्यों?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) लेखक को बचपन से क्या शौक था?

(2) लेखक के पिता कहाँ के प्रधान थे?

(3) लेखक की प्रिय पुस्तक कौन सी थी?

(4) लेखक कौन-सी फिल्म देखने गये?

(5) लेखक की माँ की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

4. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी शब्द लिखिए :

(1) लाइब्रेरी (2) थियेटर

(3) पिक्चर (4) इंडिया

(5) लाइब्रेरियन

5. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(1) आरम्भ ×

(2) आनंद ×

(3) जीवन ×

(4) छोटा ×

(5) दुःख ×

6. निम्नलिखित वाक्यों में से साधारण, संयुक्त तथा मिश्रित वाक्यों को पहचान कर नाम लिखिए :

(1) मेरे पिता आर्य-समाज रानी मंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

(2) माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती थी।

(3) जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से एक रुपये छह आना माँ के हाथ में रख दिया।

(4) उनका आशीर्वाद था या मेरा जी-तोड़ परिश्रम के तीसरे चोथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।

(5) उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था।

7. संधि विग्रह कीजिए :

(1) वीरोचित (2) रमेश

(3) देवोचित (4) सुरेश

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अपने स्कूल की लाइब्रेरी में जाकर अपनी पसंदीदा पुस्तकों की सूचि बनाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'मेरी प्रिय पुस्तक' विषय पर निबंध लेखन करवाइए।
- विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय 'नेशनल लाइब्रेरी' की कक्षा में विद्यार्थिओं की जानकारी दे।

●

समास

'समास' (Compounds) का शाब्दिक अर्थ है- संक्षेप या संक्षिप्त करने की रचना विधि। निम्नलिखित वाक्यों को देखिए-

- राजा का कुमार सख्त बीमार था।
- राजकुमार सख्त बीमार था।

उपर्युक्त वाक्यों में हम देख रहे हैं कि 'राजा का कुमार' का संक्षिप्त रूप 'राजकुमार' हो गया है। अर्थात् दो या अधिक शब्दों का अपने विभक्ति-चिह्नों अथवा अन्य प्रत्ययों को छोड़कर आपस में मिल जाना ही 'समास' कहलाता है।

तात्पर्य यह कि समास में कम-से-कम दो पदों का योग होता है। जब वे दो या अनेक पद एक हो जाते हैं तब समास होता है।

समास होने के पूर्व पदों के रूप को (बिखरे रूप) 'समास-विग्रह' और समास होने के बाद बने संक्षिप्त रूप को 'समस्त पद' या 'सामासिक पद' कहते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरणों में 'राजा का कुमार'- समास विग्रह और 'राजकुमार' को हम 'समस्त पद' कहेंगे।

समास के भेद :

हिंदी में समास के मुख्यः छ माने जाते हैं

(1) अव्ययीभाव समास

(2) कर्मधारय समास

(3) द्विगु समास

(4) द्वंद्व समास

(4) तत्पुरुष समास

(4) बहुब्रीहि

उपर्युक्त भेदोंमें से प्रथम चार समासों का अध्ययन इस कक्षा में करेंगे।

(1) अव्ययीभाव समास :

- जिस समास में पहला पद प्रधान हो तथा वह शब्द अव्यय हो और सामासिक शब्द का क्रियाविशेषण के समान उपयोग हो, उसे 'अव्ययीभाव समास' कहते है।
- दूसरे शब्दों में अव्ययीभाव का पूर्वपद अव्यय होता है और उत्तरपद के मिल जाने के बाद भी समस्त पद अव्यय ही रहता है। (क्रियाविशेषण आदि अविकारी शब्द जिनका स्वरूप किसी भी लिंग, वचन या काल में प्रयोग करने पर बदलता नहीं है, वे अव्यय कहलाते है।)
- इन व्याख्याओं के संदर्भ में निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर समझिए।
  - वह यथाशक्ति प्रयत्न करेगा।
  - लड़का प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
  - वह आजीवन लोगों की सेवा करता रहा।

समस्त पद	**विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन / दिन-दिन
आजीवन	जीवनभर / जीवन-पर्यंत

उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
यथाविधि	विधि के अनुसार	यथानियम	नियम के अनुसार
यथामति	मति के अनुसार	यथासमय	समय के अनुसार
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो	यथासंभव	जितना संभव हो सके
यथोचित	जो उचित हो	आजन्म	जन्म से लेकर
आमरण	मरण तक	आकंठ	कंठ तक
प्रतिवर्ष	प्रत्येक वर्ष	प्रतिपल	प्रत्येक पल
दिनोंदिन	दिन ही दिन में	बीचोबीच	बीच ही बीच में
रातोंरात	रात ही रात में	हाथोंहाथ	हाथ ही हाथ में
बेकाम	बिना काम के	प्रत्यक्ष	आँखों के सामने
भरपेट	पेट भर के	बेखटके	बिना खटके के

निम्नलिखित अव्ययीभाव समास का विग्रह कीजिए।

निर्भय	निर्विवाद	अनुरूप	बेरहम
बेफायदा	अनजाने	यथारूचि	प्रत्येक
घड़ी-घड़ी	प्रतिमास	यथार्थ	बेफायदा
अकारण	निर्विकार	अध्यात्म	यावज्जीवन

(2) कर्मधारय समास :

- जिस समास में पूर्वपद 'विशेषण' और उत्तरपद 'विशेष्य' हो या पूर्वपद 'विशेष्य' और उत्तरपद 'विशेषण' हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद में उपमेय-उपमान का संबंध भी हो सकता है।

  उपर्युक्त व्याख्या के संदर्भ में कर्मधारय समास के उदाहरण निर्देशित हैं-

पूर्वपद 'विशेषण' और उत्तरपद 'विशेष्य' हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
महापुरुष	महान पुरुष	अंधकूप	अंधा है जो कूप
पकवान्न	पक्व अन्न	महाविद्यालय	महान है जो विद्यालय
सुहास	सुंदर है जो हँसी	सूक्ष्माणु	सूक्ष्म है जो अणु
सुविचार	अच्छा है जो विचार	महायुद्ध	महान है जो युद्ध
नवांकुर	नव है जो अंकुर	सुलोचना	सुंदर है जिसके लोचन
महावीर	महान है जो वीर	प्रधानाध्यापक	प्रधान है जो अध्यापक
महात्मा	महान है जो आत्मा	नीलगाय	नीली है जो गाय

पूर्वपद 'विशेष्य' और उत्तरपद 'विशेषण' हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह
न्यायोचित	न्याय है जो उचित
अधपका	आधा है जो पका

उपमेय - उपमान का संबंध हो ऐसे उदाहरण :

- जिसकी तुलना किसी अन्य से की जाती है उसे उपमेय और जिससे तुलना की जाती है उसे उपमान कहा जाता है। जैसे - चरणकमल समस्त पद का विग्रह होगा चरण रूपी कमल। इसमें चरण उपमेय और कमल उपमान है।

पहला पद उपमेय हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	**विग्रह**
स्त्रीरत्न	स्त्री रूपी रत्न
देहलता	देह रूपी लता
नरसिंह	नर रूपी सिंह
ग्रंथरत्न	ग्रंथ रूपी रत्न
नयनबाण	नयन रूपी बाण

पहला पद उपमान हो ऐसे उदाहरण :

समस्त पद	**विग्रह**
राजीवलोचन	राजीव के समान लोचन
प्राणप्रिय	प्राणों के समान प्रिय
भुजदंड	दंड के समान भुजा
मृगलोचन	मृग के समान लोचन
पाषाण-हृदय	पाषाण के समान है जो हृदय
कनकाभ	कनक के समान आभा
कनकलता	कनक के समान लता
कमलनयन	कमल के समान नयन
करकमल	कमल के समान कर

ध्यातव्य : जब पहला पद उपमान हो तो दोनों पदों के बीच में 'के समान' का प्रयोग किया जाता है।

निम्नलिखित समासों का विग्रह कीजिए।

दुरात्मा	क्रोधाग्नि
नीलकमल	चंद्रमुख
नीलांबर	चरणकमल
कापुरुष	मीनाक्षी
नीलकंठ	वज्रांग
नीलगगन	मधुमादन

(3) द्विगु समास :

- जहाँ समस्त पद का पहला शब्द संख्यावाचक अथवा परिमाणवाचक विशेषण होता है, वहाँ द्विगु समास होता है।

उदाहरण :

समस्त पद **विग्रह**

1. त्रिकाल — त्रि (तीनों) कालों का समूह
2. त्रिफला — त्रि (तीन) फलों का समूह
3. पंचामृत — पंच (पाँच) अमृतों का समूह

- इन उदाहरणों में क्रमांक 1 और 2 में पहला शब्द संख्यावाचक विशेषण है और क्रमांक 3 में पहला शब्द परिमाणवाचक विशेषण है। अत: ये द्विगु समास हैं।

अन्य उदाहरण :

समस्त पद	विग्रह
त्रिलोक	त्रि (तीन) लोकों का समूह
चौगुनी	चौ (चार) गुनी
नवरात्र	नव (नौ) रात्रियों का समूह
पंचनद	पाँच नदियों का समूह
चतुष्कोण	चार कोण वाला
नवग्रह	नव ग्रहों का समूह
अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार
चौमासा	चार मासों का समाहार
चवन्नी	चार आनों का समाहार
चौराहा	चार राहों का समाहार
सप्ताह	सात दिनों का समाहार
त्रिवेणी	तीन वेणियों का समाहार
तिरंगा	तीन रंगों का समाहार

निम्नलिखित द्विगु समास का विग्रह कीजिए।

- नवरत्न	- दोपहर
- पंचवटी	- अठवाड़ा
- पंचप्रमाण	- त्रिलोकी
- त्रिभुवन	- अठन्नी
- नवरस	- द्विगु
- दोपहर	- अठलोना
- छमाही	- अष्टधातु
- तिकोना	- षड्रस
	- पंचवदन

(4) द्वंद्व समास

- इस समास में समस्त पद के दोनों पद प्रधान होते हैं। समस्त पद का विग्रह करने पर बीच में

समुच्चयबोधक अव्यय 'और' अथवा 'या' शब्द लगाना पड़ता है। इसमें दोनों पदों को मिलाते समय मध्य-स्थित योजक लुप्त हो जाता है। जैसे - 'सत्य' और 'असत्य' का समस्त पद होगा 'सत्यासत्य'। यहाँ दोनों पद प्रधान हैं।

द्वंद्व समास के तीन प्रकार हैं-

(1) इतरेतर द्वंद्व समास :

इस कोटि के समास में समुच्चयबोधक अव्यय 'और' का लोप होता है। जैसे-

	समस्त पद	विग्रह
-	ऋषि-मुनि	ऋषि और मुनि
-	माता-पिता	माता और पिता
-	गाय-बैल	गाय और बैल
-	सीता-राम	सीता और राम
-	राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण
-	भाई-बहन	भाई और बहन

(2) वैकल्पिक द्वंद्व समास :

इस समास में विकल्प सूचक समुच्चयबोधक अव्यय 'या', 'वा', 'अथवा' का प्रयोग होता है, जिसका समास करने पर लोप हो जाता है। जैसे-

	समस्त पद	विग्रह
-	धर्माधर्म	धर्म या अधर्म
-	छोटा-बड़ा	छोटा या बड़ा
-	थोड़ा-बहुत	थोड़ा या बहुत
-	ठंडा-गरम	ठंडा या गरम
-	हाँ-ना	हाँ या ना
-	लाभालाभ	लाभ या अलाभ
-	जोड़-तोड़	जोड़ना या तोड़ना
-	गुण-दोष	गुण या दोष

(3) समाहार द्वंद्व समास :

जिस समास से उसके पदों के अतिरिक्त उसी तरह का और भी अर्थ सूचित हो, उसे समाहार द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे-

-	दाल-रोटी	दाल, रोटी वगैरह
-	कपड़ा-लता	कपड़ा, लता वगैरह
-	सेठ-साहूकार	सेठ तथा साहूकार आदि धनी लोग
-	रुपया-पैसा	रुपये, पैसे, गहने वगैरह

ध्यातव्य बिन्दु : जब दोनों पद विशेषण हो और उसी अर्थ में आए तब वह द्वंद्व न होकर कर्मधारय हो जाता है। जैसे - भूखा-प्यासा लड़का रो रहा है। यहाँ 'भूखा-प्यासा' लड़के का विशेषण है। अत: कर्मधारय समास के अन्तर्गत आएगा।

निम्नलिखित द्वंद्व समास का विग्रह कीजिए।

–	अपना-पराया	अमीर-गरीब
–	गंगा-यमुना	लव-कुश
–	स्त्री-पुरुष	यश-अपयश
–	स्वर्ग-नरक	मान-सम्मान
–	हानि-लाभ	रुपया-पैसा
–	कर्तव्याकर्तव्य	देश-विदेश
–	जीव-जन्तु	देवासुर

●

24 कबीर के दोहे

कबीर
(जन्म : सन् 1398 ई. : निधन : सन् 1518 ई.)

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा में कबीर का स्थान सर्वोपरि हैं। जनश्रुति है कि कबीर की पत्नी का नाम लोई, पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। तत्कालीन सामाजिक अव्यवस्था के कारण कबीर विधिवत् शिक्षा नहीं पा सके किंतु प्रेम का ढाई अक्षर पढ़कर पंडित हो गए थे। उन्होंने कहा है कि, ''मसिकागद छूयौ नहीं, कलम गह्यौ नहीं हाथ।'' कबीर को स्वामी रामानंद से वेदांत का, सूफी कवि शेख तकी से सूफीमत का और वैष्णव साधुओं के संपर्क में आने से अहिंसा का तत्त्व मिला। उनकी कविता अनुभव का अथाह ज्ञान भण्डार है। जीवन की सच्चाई और वाणी में विश्वास के कारण उनकी कविता हृदय के तार झनझना देती है। कबीर ने अपने युग की विसंगतियों तथा अन्तर्विरोधों को देखकर अपनी कविताओं के माध्यम से उन पर खुलकर तीखा प्रहार किया है। ''मैं कहता आखिन की देखी, तू कहता कागद की लेखी'' से स्पष्ट होता है कि वे जन्म से विद्रोही, समाज सुधारक, धर्म सुधारक और अपने समय के अनुरूप कवि थे। इन्होंने अपनी रचनाओं में 'सधुक्कड़ी' भाषा का उपयोग किया है। जिसमें खड़ी बोली, ब्रजभाषा, पंजाबी, पूर्वी हिन्दी, अवधी आदि कई बोलियों का मिश्रण है। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग हैं- रमैनी, सबद, साखी। रमैनी और सबद ये गेय पद हैं तथा साखी में दोहे संकलित हैं।

प्रस्तुत दोहों में कबीर ने विभिन्न पहलुओं पर दृष्टिपात किया है। प्रथम दोहे में परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, फिर भी हम देख नहीं पाते हैं, दूसरे दोहे में मुझमें जो कुछ है, वह ईश्वर का ही है और वह ईश्वर को सौंपने से अपना कुछ नहीं रहता है, तीसरे दोहे में जन्म सार्थक करने हेतु साधु पुरुषों की संगति करने का, चौथे दोहे में अप्रामाणिक रूप से संपत्ति इकट्ठी करके उसमें से दान करने पर स्वर्गप्राप्ति नहीं हो सकती हैं, पाँचवे दोहे में दुर्जनों की सज्जनों की विशेषता है, छठे में दूसरों की संपत्ति देखकर दु:खी होने के बजाय ईश्वर ने हमें जो दिया है उसमें संतोष रखना चाहिए, सातवें में संसार के पंच रत्न के बारे में, आठवें में बाह्याडंबर का विरोध, नौवे में सुख में भी भगवान को याद किया जाय तो दु:ख हो ही क्या?

कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूँढे बन माहिं।
ऐसे घट-घट राम है, दुनिया देखे नाहिं ॥1॥

मेरा मुझमें कछु नहीं, जो कछु हय सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपते, क्या कागेगा मेरा॥2॥

संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दु:ख होय।
सेवा कीजे संत की, तो जनम कृतार्थ सोय ॥3॥

एहरन की चोरी करे, करे सूई का दान।
ऊँचे चढ़कर देखते, कैतिक दूर विमान? ॥4॥

सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥5॥

रुखा सूखा खाई कै, ठण्डा पानी पीव।
देख पराई चूपड़ी, मत ललचावै जीव॥6॥

कबीर! इस संसार में, पंच रत्न हैय सार।
साधु मिलन, हरिभजन, दया-दीन-उपकार ॥7॥

काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चिनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥8॥

दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दु:ख काहे को होय॥9॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

कस्तूरी मृगनाभि से निकलनेवाला एक सुगंधित द्रव्य **कुंडली** नाभि **मृग** हरिन, हिरन **कृतार्थ** जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो, सन्तुष्ट, मुक्त **एहरन** निहई (एरण), लोहार का एक औज़ार **दरार** दरज **चूपडी** चूपडी हुई **सार** मुख्य, सत **दीन** नम्र, विनीत **काँकर** कंकड़ **पाथर** पत्थर **सुमिरन** स्मरण

स्वाध्याय

1. **एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**
   (1) मृग कस्तूरी को कहाँ ढूँढ़ता है?
   (2) हमारा जन्म कृतार्थ करने के लिए किसकी सेवा करनी चाहिए?
   (3) भवसागर तरने के लिए कौन-कौन से पाँच तत्त्व हैं?

2. **निम्नलिखित भावार्थवाले दोहे ढूँढ़कर उनका गान कीजिए :**
   (1) परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, फिर भी हम देख नहीं पाते हैं।
   (2) हमें जो कुछ मिला है, वह ईश्वर का ही है और वह ईश्वर को सौंपने से अपना कुछ नहीं रहता है।
   (3) अप्रामाणिक रूप से संपत्ति इकट्ठी करके उसमें से दान करने पर स्वर्गप्राप्ति नहीं हो सकती है।
   (4) दूसरों की संपत्ति देखकर दु:खी होने के बजाय ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है उसमें संतोष रखना चाहिए।

3. **निम्नलिखित दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :**
   (1) संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दु:ख होय।
   सेवा किजे संत की, तो जनम् कृतार्थ सोय ॥

   (2) सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरै सौ बार।
   दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥

   (3) काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय।
   ता चढि मुल्ला बाँग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥

   (4) दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
   जो सुख में सुमिरन करे, तो दु:ख काहे को होय॥

योग्यता-विस्तार

- कबीर के अन्य दोहे पढ़िए और संग्रह कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- इकाई में समाविष्ट दोहों का समूहगान करवाइए।
- कबीर के उन दोहों को ढूँढ़कर पढ़िए जिनमें बाह्याडंबरों का विरोध किया गया है।
- 'कबीर आज भी प्रासंगिक है' इस विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन कीजिए ।

●

पूरक-वाचन

1 विमान से छलाँग

श्यामचन्द्र

इस पत्र में लेखक ने पैराटूपिंग (विमान से छलाँग) प्रशिक्षण के साहसिक अनुभवों का सजीव वर्णन किया है। विमान से छलाँग से पूर्व एक महीने का जमीनी प्रशिक्षण आवश्यक होता है। आगरा केन्ट में पैराटूपिंग मिलिट्री की एक कोर है, जिसमें इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण के बाद में पैराशूट की सहायता से आकाश में उड़ते हुए विमान से जमीन पर छलाँग लगाई जाती है। इसी का मार्मिक वर्णन पत्र में किया गया है।

47, पैराटूपिंग कोर,
आगरा कैण्ट,
24-9-1981

फ्लाइट लेफ्टिनैंट बत्रा,

सस्नेह नमस्ते।

जैसा कि मैंने कहा था कि मैं पैराटूपिंग के अनुभव का पत्र में वर्णन करूँगा, यहाँ विस्तार से वृत्तान्त लिख रहा हूँ।

विमानों से छलाँग लगाकर पेराशूट के सहारे नीचे आनेवाले बहादुरों के बारे में मुझे बड़ी उत्सुकता रहती थी। कैसा महसूस होता होगा हवा में अकेले लटकना? कभी-कभी मैं यह भी सोचता कि यदि छतरी ही न खुले तो क्या हो?

लेकिन जब मैंने पैराटूपिंग (पैराशूट के सहारे विमाने से नीचे कूदने की विद्या) सीखनी शुरू की, तब मेरी समझ में आया कि पैराटूपर बनने के लिए सचमुच बहादुरी की आवश्यकता होती है। उसके लिए तंदुरस्ती तो ठीक होनी ही चाहिए, हवाई जहाज से छलाँग लगाने की हिम्मत भी होनी चाहिए। शुरू में तो बहुत ऊँचाई से नीचे की ओर देखना ही काफ़ी डरावना लगता है। जरा सोचो, कोई तुमसे वहाँ से नीचे कूदने के लिए कहे, तो क्या हो?

खैर, मेरी पैराटूपिंग की एक महीने की ट्रेनिंग शुरू हो गई। सबसे पहले थी ग्राउंड ट्रेनिंग। कुछ दिन हमें जमीन पर ही अभ्यास करना था। कुछ समय बाद जब हमने पैराशूट के बारे में कई बातें जान लीं, तो हमारे मन से धीरे-धीरे ऊँचाई का डर दूर होता गया और हम आदेश मिलते ही छलाँग लगाने के लिए मानसिक रूप से तैयार होते गये।

इसके पहले कि हम विमानों से छलाँग लगाते हमने फैन जंप लगाये। इसमें ऊँचे प्लेटफोर्म पर से कूदना होता है और इस बात का खास ध्यान रखना होता है कि जब हम जमीन पर गिरे तो हमारे लुढ़कने का तरीका ठीक वही हो, जो हमें सिखाया गया है।

फैन जंप में तो मैं काफ़ी सफल रहा, लेकिन अब देखना यह था कि जब विमान में से कूदने का समय आता है, तो वह छलाँग में कितनी बहादुरी और सफलता के साथ लगा सकता हूँ।

आखिर वह दिन भी आया, जब हमें विमान से छलाँग लगानी थी, विमान में बैठे मजे से खिड़की के बाहर झाँकना एक बात होती है और इतनी ऊँचाई पर से कूदना दूसरी ! शुरू-शुरू में कुछ समय तो डर लगता ही है, लेकिन छलाँग तो हमें लगानी ही थी। उसके लिए पूरे एक महीने की ट्रेनिंग जो ली थी। आज हमारी परीक्षा ही थी।

हम सभी विमान में बैठे और विमान उड़ा। धीरे-धीरे जमीन पर सारी चीजें छोटी होती जा रही थी। जमीन दूर होती जा रही थी और हम ऊपर उठते जा रहे थे। हम सब काफ़ी उत्तेजित थे। विमान में बैठकर सब ऊपर तो आ गये थे लेकिन अब नीचे जाने में, हमें अपना करतब दिखाना था। हमारी तैयारी भी पूरी थी।

विमान निश्चित ऊँचाई पर आ चुका था। अब हमें कूदना था। मैं पूरी हिम्मत के साथ दरवाजे के पास गया, बाहर की तेज हवा दरवाजे पर भी महसूस हो रही थी। मैं अपने पैराशूट और हेल्मेट वगैरह के साथ एकदम तैयार था। जैसे ही 'गो' की आवाज आये, मुझे नीचे कूदना था। अब मेरे दिमाग में छलाँग लगाने के सिवाय और कुछ नहीं था। पूरा ध्यान उसी पर केन्द्रित था। पल पल बीत रहा था। मैं बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

'गो' की आवाज आई और मैं चला। दिल जोर से धड़क रहा था। पृथ्वी रेत के एक बड़े माँडल की तरह दिख रही थी और मैं तेज़ी से नीचे जा रहा था। वह बड़ा ही अनोखा अनुभव था। कुछ ही क्षण बीते थे कि मैंने पैराशूट खोल दिया। पैराशूट ऊपर उठा और छतरी की तरह फैल गया। इसके बाद मैं मजे से हवा में तैर सा रहा था। अपने आप पर गर्व सा महसूस हो रहा था।

मैं पृथ्वी के करीब आता जा रहा था। ऊपर से छोटी दिखनेवाली पृथ्वी पर की सभी चीजें धीरे-धीरे बड़ी हो गयी थीं। जमीन केवल 8-9 मीटर ही नीचे थी। मैंने अपने पैर सीधे कर लिये। अब मैं जल्दी ही उन्हें जमीन पर रखनेवाला था, कितना अच्छा होगा वह क्षण।

और लो! मैं जमीन पर पहुँच गया। हमारे प्रशिक्षक और कई लोग आसपास खड़े थे, मुझे और मेरे साथियों को बधाई देने के लिए।

साथियों को मेरी जयहिन्द।

आपका
राकेश प्रधान

शब्दार्थ और टिप्पणी

पैराटूपिंग आकाश में हवाई जहाज से पैराशूट (हवाई छत्री) द्वारा धरती पर छलाँग लगाकर उतरने की प्रक्रिया **ट्रेनिंग** प्रशिक्षण **ग्राउंड** मैदान, धरती **फैन जम्प** ऊँचे प्लेटफार्म से कूदना

•

2 राष्ट्र का स्वरूप

वासुदेवशरण अग्रवाल

(जन्म : सन् 1904 ई.; निधन : सन् 1966 ई.)

वासुदेवशरण अग्रवाल ने सन्म लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. किया । तदन्तर वे सन् 1940 ई. तक मथुरा के पुरातत्व संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर रहे । बाद में उन्होंने पी.एच.डी. तथा डी.लिट्. की उपाधियाँ प्राप्त कीं । उन्होंने भारतीय पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष पद का भी सफलतापूर्वक निर्वाह किया । सन् 1951 इ. में वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ इंडोलॉजी में प्रोफेसर नियुक्त हुए । वे भारतीय मुद्रा परिषद, भारतीय संग्रहालय परिषद् तथा ऑल इंडिया रयंटल कांग्रेक के सभापति रह चुके हैं । भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अन्वेषक तथा इतिहास और पुरातत्व के गहन विद्वान के रूप में वे देश भर में सम्मान पाते रहे ।

उनकी लिखी हुई और प्रमुख सम्पादित पुस्तकें इस प्रकार हैं : 'उरुज्योति', 'कला और संस्कृति', 'कल्पवृक्ष', 'कादम्बरी', भारत की मौलिक एकता ।'

'राष्ट्र का स्वरूप' एक चिन्तनात्मक निबन्ध है । इसमें लेखक ने देश को राष्ट्र बनानेवाले तत्त्वों की चर्चा की है । भूमि, भूमि पर बसने वाले जन और जन की संस्कृति - ये ही तीन तत्त्व हैं जो एक देश को राष्ट्र बनाते हैं । इन तीनों का राष्ट्रीय जीवन में महत्त्व प्रतिपादित करके लेखक राष्ट्र की जनता को यह अनुरोध करता है कि वह इनका मूल्य पहचानें तथा इनका गौरव करें ।

भूमि, भूमि पर बसने वाला जन और जन की संस्कृति, इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है ।

भूमि का निर्माण देवों ने किया है, वह अनन्त काल से है । उसके भौतिक रुप, सौन्दर्य और समृध्दि के प्रति सचेत होना हमारा आवश्यक कर्तव्य है । भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने अधिक जाग्रत होंगे उतनी ही हमारी राष्ट्रीयता बलवती हो सकेगी । यह पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त रास्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है । जो राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ नहीं जुड़ी वह निर्मूल होती है । राष्ट्रीयता की जड़ें पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी उतना ही राष्ट्रीय-भावों का अंकुर पल्लवित होगा । इसलिए पृथ्वी के भौतिक स्वरुप की आद्योपांत जानकारी प्राप्त करना, उसकी सुन्दरता, उपयोगिता और महिमा को पहचाना आवश्यक धर्म है । उदाहरण के लिए, पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने वाले मेघ जो प्रति वर्ष समय पर आकर अपने अमृत जल से इसे सींचते हैं, हमारे अध्ययन की परिधि के अन्तर्गत आने चाहिए । उन मेघजलों से परिवर्धित प्रत्येक तृणलता और वनस्पति का सूक्ष्म परिचय प्राप्त करना भी हमारा कर्तव्य है ।

इस प्रकार जब चारोंओर से हमारे ज्ञान के कपाट खुलेंगे, तब सैंकड़ों वर्षों से शून्य और अन्धकार से भरे हुए जीवन के क्षेत्रों में नया उजाला दिखाई देगा ।

धरतीमाता की कोख में जो अमूल्य निधियाँ भरी हैं, जिनके कारण वह वसुन्धरा कहलाती है, उनसे कौन परिचित न होना चाहेगा ? लाखों-करोडों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है । दिन-रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस-पीस कर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है । हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिये इन सब की जाँच-पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है । पृथ्वी की गोद में जन्म लेनेवाले खड़े पत्थर कुशल शिल्पियों से सँवारे जाने पर अत्यन्त सौंन्दर्य का प्रतीक बन जाते हैं । नाना भांति के अनगढ़ नग विंध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं, उन सिलवटों को जब चतुर कारीगर पहलदार कटाव पर लादे हैं तब उनके प्रत्येक घाट से नई शोभा और सुन्दरता फूट पड़ती है, वे अनमोल हो जाते हैं । पृथ्वी और आकाश के अन्तराल में जो कुछ सामग्री भरी है, पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए गम्भीर सागर में जो जलचर एवं रत्नों की राशियाँ हैं, उन सबके प्रति चेतना और स्वागत के नए भाव राष्ट्र में फैलने चाहिए । राष्ट्र के नवयुवकों के ह्रदय में उन सबके प्रति जिज्ञासा की नई किरणें जब तक नहीं फूटतीं तब तक हम सोए हुए के समान हैं ।

विज्ञान और उद्योग दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का एक नया ठाट खड़ा करना है । यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और अथक परिश्रम के द्वारा नित्य आगे बढ़ाना चाहिए । हमारा यह ध्येय हो कि राष्ट्र में जितने हाथ हैं उनमें से कोई भी इस कार्य में भाग लिए बिना न रहे ।

मातृभूमि पर निवास करनेवाले मनुष्य राष्ट्र के दूसरे अंग हैं । पृथ्वी हो और मनुष्य न हों, तो राष्ट्र को कल्पना असम्भव है । पृथ्वी और जन दोनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप सम्पादित होता है । जन के कारण ही पृथ्वी मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है । पृथ्वी माता है और जन सच्चे अर्थों में पृथ्वी का पुत्र है - माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । 'भूमि माता है, मैं उसका पुत्र हूँ' जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है । इसी भावना से राष्ट्र निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं ।

यह भाव सशक्त रूप में जागता है तब राष्ट्र-निर्माण के स्वर वायुमण्डल में भरने लगते हैं । इस भाव के द्वारा ही मनुष्य पृथ्वी के साथ अपने सच्चे सम्बन्ध को प्राप्त करते हैं । जहाँ यह भाव नहीं है वहाँ जन और भूमि का सम्बन्ध अचेतन और जड़ बना रहता है । जिस समय भी जन का हृदय भूमि के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को पहचानता है उसी क्षण आनन्द और श्रद्धा से भरा हुआ उसका प्रणाम-भाव मातृभूमि के लिए प्रकट होता है । यह प्रणाम-भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बन्धन है । इसी दृढ़ भित्ति पर राष्ट्र का भवन तैयार किया जाता है । इसी दृढ़ चट्टान पर राष्ट्र का चिरजीवन आश्रित रहता है । इसी मर्यादा को मानकर राष्ट्र के प्रति मनुष्यों के कर्तव्य और अधिकारों का उदय हता है । जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को स्वीकार करता है, उसे ही पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है । माता के प्रति अनुराग और सेवा-भाव पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है । वह एक निष्कारण धर्म है । स्वार्थ के लिए पुत्र का माता के प्रति प्रेम, पुत्र के अधःपतन को सूचित करता है । जो जन मातृभूमि के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहता है उसे अपने कर्तव्यों के प्रति पहले ध्यान देना चाहिए ।

माता अपने सभी पुत्रों को समान भाव से चाहती है, इसी प्रकार पृथ्वी पर बसने वाले जन बराबर हैं । उनमें ऊँच और नीच का भाव नहीं है । जो मातृभूमि के हृदय के साथ जुड़ा हुआ है, वह समान अधिकार का भागी है । पृथ्वी पर निवासी करने वाले जनों का विस्तार अनंत है — नगर और जनपद, पुर और गाँव, जंगल और पर्वत नाना प्रकार के जनों से भरे हुए हैं । ये जन अनेक प्रकार की भाषाएँ बोलने वाले और अनेक धर्मों के मानने वाले हैं, फिर भी वे मातृभूमि के पुत्र हैं और इस कारण उनका सौहार्द भाव अखंड है । सभ्यता और रहन-सहन की दृष्टि से जन एक दूसरे से आगे पीछे हो सकते हैं, किन्तु इस कारण से मातृभूमि के साथ उनका जो सम्बन्ध है, उसमें कोई भेद-भाव उत्पन्न नहीं हो सकता । पृथ्वी के विशाल प्रांगण में सब जातियों के लिए समान क्षेत्र है । इतिहास के अनेक उतार-चढ़ाव पार करने के बाद भी राष्ट्र निवासी जन नई उठती लहरों से आगे बढ़ने के लिये आज भी अजर-अमर हैं । जन का सततवाही जीवन, नदी के प्रवाह की तरह है जिसमें कर्म और श्रम के द्वारा उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना होता है ।

राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है । मनुष्यों ने युग-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना बन्धमात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है । संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृध्धि सम्भव है । राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है । यदि भूमि और जन अपनी संस्कृति से विरहित कर दिए जाएँ तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए । जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है । भूमि पर बसने वाले जन से ज्ञान के क्षेत्र में जो सोचा है और कर्म के क्षेत्र में जो रचा है - दोनों के रूप में हमें राष्ट्रीय संस्कृति के दर्शन मिलते हैं ।

जंगल में जिस प्रकार अनेक लता, वृक्ष और वनस्पति अपने अदम्य भाव से उठते हुए पास्परिक सम्मिलन से अविरोधी स्थिति प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जन अपनी संस्कृतियों के द्वारा एक-दूसरे के साथ मिलकर राष्ट्र में रहते हैं। जिस प्रकार जलों के अनेक प्रवाह नदियों के रूप में मिलकर समुद्र में एकरूपता प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन की अनेक विधियाँ राष्ट्रीय संस्कृति में समन्वय प्राप्त करती हैं । समन्वययुक्त जीवन ही राष्ट्र का सुखदायी रूप हैं ।

साहित्य, कला, नृत्य, गीत, आमोद-प्रमोद अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं । गाँवों और जंगलों में स्वच्छन्द जन्म लेने वाले लोकगीतों में तारों के नीचे विकसित लोककथाओं में संस्कृति का अमित भण्डार भरा हुआ है, जहाँ से आनन्द की भरपूर मात्रा प्राप्त हो सकती है । राष्ट्रीय संस्कृति के परिचय-काल में उन सबका स्वागत करने की आवश्यकता है ।

पूर्वजों ने चरित्र और धर्म, विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ भी पराक्रम किया है उस सारे विस्तार को हम गौरव के साथ धारण करते हैं और उसके तेज को अपने भावी जीवन में साक्षात् देखना चाहते हैं । जहाँ अतीत वर्तमान के लिए भाररूप नहीं है, जहाँ भूत वर्तमान का जकड़ रखना नहीं चाहता वरन् अपने वरदान से पुष्ट करके उसे आगे बढ़ाना चाहता है, उस राष्ट्र का हम स्वागत करते हैं ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

भौतिक पंच महाभूत से संबंन्ध रखनेवाला, पार्थिव **निर्मूल** जड़ से उखड़ा हुआ, बिना जड़ या मूल का **आद्योपांत** शुरू से अंत तक **चीलवटों** किसी चीज़ को झपट कर ले लेना **विरहित** अलग **अभ्युदय** उन्नति, विकास, भाग्य खुलना **सौहार्द** सज्जनता, मित्रता, भाईचारा, सहृदय **सततवाही** निरन्तर, अविरत **कबन्ध** वह शरीर जिसका सिर नहीं हो, सिर रहित काया

•

3 कुण्डलियाँ

गिरिधर

(जन्म : सन् 1714 ई. निधन : सन् 18वीं शताब्दी)

सुविख्यात कवि गिरिधर राय के जीवन के संबंध में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये अपने समय के अत्यंत लोकप्रिय कवि थे । इनके द्वारा रचित पाँच-सौ से अधिक कुण्डलियाँ 'गिरिधर' कविराय ग्रंथावली में संकलित हैं । इनकी कुण्डलियाँ नीति विषयक हैं । कवि के व्यापक जीवन-अनुभवों का संचित अमृत इनकी रचनाओं में जीवन-संदेश बनकर प्रकट हुआ है । कवि की भाषा-शैली सरल एवं सहज होते हुए भी नीति जैसे विषयों को समझाने में सक्षम है ।

प्रथम कुण्डली में कवि ने छोटे के महत्त्व को कम नहीं आँकने के लिए कहा क्योंकि कुल्हाड़ी छोटी होते हुए भी बड़े से बड़े विशालकाय वृक्ष को गिरा देती है । दूसरी कुण्डली में कवि ने बीती हुई घटना को भूल जाने में ही भलाई माना है । तीसरी कुण्डली में उन्होंने कार्य सम्पन्न होने तक अपने मन को एकाग्र चित्त रखने को कहा है इससे कार्य पूरा भी हो जाता है और लोगों को हँसने का मौका भी नहीं मिलता ।

---

(1)

सांई ये न विरोधिए, छोट बड़े सब भाय ।
ऐसे भारी वृक्ष को, कुल्हरी देत गिराय ।।
कुल्हरी देत गिराय, मारि के जमीं गिराई ।
टूक-टूक कै काटि, समुद्र में देत बहाई ।।
कह 'गिरिधर कविराय', फूट जेहि के घर आई ।
हिरणाकश्यप, कंस, गए बलि, रावण सांई ।

(2)

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेई ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देई ।।
ताही में चित्त देई, बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन हँसे न कोई, चित्त में खता न पावै ।।
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती ।
आगे को सुख समुझि, हो, बीती सो बीती ।।

(3)

साईं अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोई ।
तब लग मन में राखिए, जब लग कारज होई ।।
जब लग कारज होई, भूलि कबहूँ नहिं कहिए ।
दुरजन हँसे न कोइ, आप सियरे ह्वै रहिए ।।
कह गिरिधर कवि राय बात चतुरना की ताई ।
करतूती कहीं देत आप कहिए नहीं साँई ।।

शब्दार्थ - टिप्पणी

कुंडलियाँ एक छंद-विशेष, जिसमें पहली दो पंक्तियाँ दोहे की और अंतिम चार पंक्तियाँ रोला की होती हैं । दोहे के अंतिम चरण को रोला छंद के प्रथम चरण के रूप में दोहराया जाता है और पहला शब्द ही छंद का अंतिम शब्द होता है। **विरोधिए** विपरीत भाव **कुल्हरी** कुल्हाड़ी **खता** कसूर **करुमन** कर्म, करनी **परतींती** प्रतीति **सियरे** शांत **चतुरन की ताई** समझदारों के लिए **करतूती** कर्म गुण

4 महान भारतीय वैज्ञानिक : विक्रम साराभाई

पी.सी.पटेल

(जन्म : सन् 1938 ई.)

भौतिक विज्ञान के प्राध्यापक पी.सी.पटेल का जन्म लणवा ग्राम (जिला-पाटन) गुजरात में हुआ एस.एससी. तक की पढ़ाई सर्व विद्यालय कड़ी (महेसाणा) में हुई थी । गुजरात कॉलेज अहमदाबाद से उन्होंने बी.ऐससी. तथा एम.ए. साइंस कॉलेज अहमदाबाद से एम.एससी. की पढ़ाई पूरी की । तत्पश्चात् वे एम.जी. साइंस कॉलेज में अध्यापक बने और सेवानिवृत्ति तक भौतिक विज्ञान का शिक्षणकार्य करते रहे । उन्होंने हिन्दी साहित्य संमेलन प्रयाग से हिन्दी विशारद की परीक्षा भी उत्तीर्ण की ।

विज्ञान, कम्प्यूटर, भौतिक विज्ञान से संबंधित उनके लगभग चौदह ग्रंथ अंग्रेज़ी-गुजराती में प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी पुस्तक 'इजनेरी दर्शन' (इंजीनियर दर्शन) को गुजरात सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । गुजरात विश्वकोश के लिए अधिकरण लेखक-संपादक के रूप में उन्होंने अमूल्य सेवाएँ दी हैं ।

यहाँ संकलित लेख हिन्दी में लिखा गया है जिसमें गुजरात के अमर सपूत विक्रम साराभाई की सेवाओं का समृध्द्धि एवं शांति के लिए उनकी प्रतिबध्धता तथा प्रयासों का परिचय मिलता है ।

आज भारत विज्ञान और तकनीकी - क्षेत्र में विश्व के विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में आ रहा है, इसका बहुत कुछ श्रेय आज़ादी के बाद देश में हुए वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यो को दिया जा सकता है । भारत में परमाणु ऊर्जा-उत्पादक की नींव डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने रखी थी । भारत परमाणु-ऊर्जा के शांतिमय उपयोग के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्र है । डॉ. भाभा के आकस्मिक निधन के बाद इस क्षेत्र में उनके अधूरे कार्यो को पूरा करने की जिम्मेदारी जिस वैज्ञानिक पर आई, वह थे-डॉ. विक्रम साराभाई । भारत को अवकाश संशोधन एवं परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति के पथ पर ले जाने के श्रेय भाभा, विक्रमभाई साराभाई जैसे वैज्ञानिकों को है ।

विक्रमभाई का जन्म अहमदाबाद के एक उद्योगपति परिवार में 12 अगस्त 1919 को हुआ था । इनके पिता का नाम श्री अंबालाल साराभाई तथा माता का नाम सरला देवी था । पारिवारिक वातावरण ने बालक साराभाई में उत्तम गुणों की नींव डाली । इनकी आरंभिक शिक्षा घर पर ही कुशल अध्यापकों-शिक्षकों की देखरेख में हुई । उन्होंने गुजरात कॉलेज अहमदाबाद में उच्च शिक्षा पाई तथा आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें इंग्लैण्ड भेजा गया, जहाँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उन्होंने भौतिक विज्ञान की पढ़ाई की ।

विक्रम साराभाई के परिवार में उस समय देश के विख्यात व्यक्तियों, विद्वानों का आना-जाना लगा रहता था। 1924 में रवीन्द्रनाथ टागोर और दीनबंधु एन्ड्रूज़ उनके पारिवारिक निवास 'रिट्रीट' पर आए । विक्रमभाई उस समय बालक थे । उन्हें देखते ही टैगोर बोल उठे - 'अरे ! यह बालक तो अत्यंत असाधारण और मेघावी है ।' यह थी उनके लिए भविष्यवाणी । प्रसिद्ध इतिहासविद् यहुनाथ सरकार, भौतिक विज्ञानी जगदीशचंद्र बोस और चन्द्रशेखर रामन, प्रसिद्ध अधिवक्ता चितरंजनदास और भूलाभाई देसाई मदनमोहन मालवीय, महादेव देसाई, समाजसेवी आचार्य कृपलाणी तथा साहित्यकार काका कालेलकर प्रभृति महानुभावों का प्रत्यक्ष परिचय उन्हें बचपण में ही मिला था । उनके कार्यो और जीवनशैली का विक्रमभाई पर अच्छा प्रभाव पड़ा । उनमें देशप्रेम की भावना विकसित हुई । इसीलिए कैम्ब्रिज से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाई । वे चाहते तो अपनी प्रतिभा, ख्याति और पारिवारिक संपर्को के बल पर विदेश की किसी भी प्रयोगशाला में अपना अनुसंधान कार्य कर सकते थे, पर भारत लौटकर उन्होंने बंगलोर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान (I.I.Sc.) में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भौतिक वैज्ञानिक चन्द्रशेखर रमन के मार्गदर्शन में ब्रह्माण्ड किरणों पर अनुसंधान कार्य आरंभ किया । यहाँ उन्हें होमी जहाँगीर भाभा का सहयोग प्राप्त हुआ।

अपनी पारिवाकि सम्पन्नता का उपयोग उन्होंने देश के विकास के लिए किया । अहमदाबाद में अनुसंधान कार्य के लिए उन्होंने भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (PRL की स्थापना तो की ही, साथ ही भारतीय कपड़ा उद्योग को आधुनिक बनाने के लिए अटीरा (ATIRA) - 'अहमदाबाद टेक्स्टाईल रिसर्च एसोसिएशन' की स्थापना की । दवाओं के उत्पादन

के क्षेत्र को भी अद्यतन बनाने का प्रयास किया। उद्योगों के कुशल प्रबंधन हेतु भारतीयों को तैयार करने के लिए अहमदाबाद में भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) की स्थापना की, जो आज भी देश की अपने तरह की सर्वोत्तम संस्था मानी जाती है।

विक्रम साराभाई एक साथ कुशल प्रबंधक, सफल, उद्योगपति, प्रखर वैज्ञानिक होने के साथ ही एक अच्छे शिक्षक रहे । परमाणु ऊर्जा और अवकाश अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए उनकी लगन ने भारत को इस क्षेत्र में विश्व का एक अग्रणी राष्ट्र बनाया ।

परमाणु ऊर्जा का शांतिमय कार्यो के लिए उपयोग तथा अवकाश-अनुसंधान का संदेश-व्यवहार, शैक्षणिक कार्यो के लिए प्रयोग से उनके इरादे स्पष्ट होते हैं । उन्होंने इनके लिए आजीवन कार्य किया । इसमें विक्रमभाई का स्वदेश प्रेम, देश को स्वावलम्बी बनाने के इच्छा, स्वदेशी-भावना साफ झलकती है । विचार और व्यवहार में विक्रमभाई महात्मा गाँधी के बहुत समीप थे । उन्हीं की तरह विक्रमभाई आजीवन समर्पित एकनिष्ठ कर्मयोगी हैं । अनासक्त भाव से स्वधर्म निर्वाह करनेवाले वे विरल विभूति रहे । हम विक्रमभाई को भारत के परमाणु और अवकाश युग के पुरस्कर्ता के रूप में, विज्ञान और विकास, स्वदेश भावना और आधुनिकता के सार्थक समन्वयकर्ता के रूप में पाते हैं । वे ऐसे स्वप्नद्रष्टा थे जो रात्रि में देखे गए स्वप्न को दिन में साकार करना चाहते थे । "राष्ट्र के लिए क्या उत्तम है, यह आप निश्चित करें । जो जनता और राष्ट्र के लिए उत्कृष्ट ही वही करें ।" — यह था विक्रमभाई का वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणामंत्र। अर्थात् आप वैज्ञानिक, इंजीनियर, तकनीशियन या विज्ञान के चाहक के रूप वह करें, जो जनता और राष्ट्र के विकास के लिए उत्कृष्ट हो, उपर्युक्त हो । यही तो है बुद्ध की बताई हुई विज्ञान की परिभाषा ।

विक्रमभाई को आधुनिक शंकराचार्य कहा जा सकता है, क्योंकि शंकराचार्य की तरह उन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक अनेक अनुसंधान शालाओं की स्थापना करके देश को विज्ञान और तक्नीकी के क्षेत्र में विकास के पथ पर अग्रसर करने हेतु वंदनीय कार्य किया । विश्वशांति की स्थापना को वे अपना धर्म मानते थे । अपने विचार, व्यवहार और वाणी के माध्यम से उन्होंने शांति का पैगाम दिया है । चंद्रमा पर 'शांति का सागर' नामक एक विस्तार है, जहाँ एक बड़ा-सा उल्कागर्त है । अंतरराष्ट्रीय खगोलीय संघ ने इस गर्त के साथ विक्रम साराभाई का नाम जोड़कर उनके खगोलीय अनुसंधान कार्यो को तो प्रतिष्ठा प्रदान की ही इस महान वैज्ञानिक को मानो अपनी भव्य भावांजलि भी दी है ।

विज्ञान को मानवता के साथ समन्वित करनेवाले इस विलक्षण विश्व नागरिक ने 30 दिसम्बर 1971 को कोवलम् (केरल) से विश्व को अलविदा कर दी ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तकनीकी प्राद्योगिकी **श्रेय** मान, सम्मान **अनुसंधान** आविष्कार, खोज, संशोधन **प्रभृति** जैसे, आदि **अनासक्त** बिना आसक्ति के, निस्पृह **पैगाम** संदेश **अवकाश** अंतरिक्ष

● ● ●